यात्रा आमंत्रण

भारत की एक मात्र हिंदी पर्यटन पत्रिका

अप्रैल – जून २०२२
अंक छठवा
मूल्य – ८०

वर्त्तमान गुलाम भारत के क्रांतिकारी

इस बार का अंक उन शूरवीरो के नाम जिन्होंने चिकित्सा माफिया की गुलामी को अस्वीकृत करते हुए आजादी का शंखनाद किया और महामारी के फर्जीवाद पर भीषण यलगार का बिगुल फूंका।

www.yatramantran.com

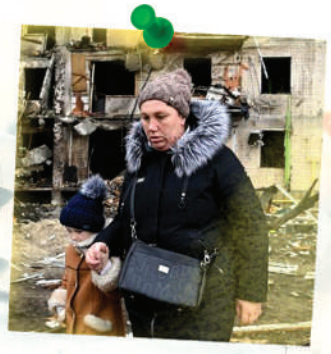

इंसानियत और मानवता के खिलाफ जो यूक्रेन में हुआ वो दो साल पहले भारत में हो चुका है,

सजा ऐ काला पानी को पुरे दो साल हो गए है।

इतिहास जब लिखा जायेगा तो यह भी दर्ज होगा की बुद्धिहीन फैसलों ने कैसे गरीब और बेबस नागरिक को दर्द और तकलीफ में झोकने का काम किया। आने वाली पीढ़ी आज के हुक्मरानो से सवाल जरूर पूछेगी की उन हजारो मौतों के लिए कौन जिम्मेदार है जो सिर्फ दो रोटी के लिए हजारो किलो मीटर की यात्रा में निकले थे। इन मौतों की जिम्मेदारी किसी को तो लेनी पड़ेगी या सिर्फ चार घंटे में तालाबंदी की घोषणा करके आप अपने काम से फारिक हो जाते है।

क्रांतिकारी संपादकीय टीम

मुख्य संपादक
बिस्वदीप रॉयचौधरी

महाराष्ट्र ब्यूरो प्रमुख
नितिन कलजे

माननीय सलाहकार
गौर कांजीलाल

कानूनी सलाह और उत्तर प्रदेश प्रमुख
प्रताप सिंह

कंटेंट लेखक
मनोज कुमार गुप्ता

जनसंपर्क प्रबंधक
सुमित आजाद
कश्मीरा एम शाह
सीमा सा मानीक्कोथ

संवाददाता
सुहासिनी साकिर

जनसंपर्क अधिकारी
मोहन जोशी

कॉपी संपादन
यश भारद्वाज

ग्राफिक डिजाइनर
सिद्धार्थ कुमार

आईटी प्रमुख
शांतनु चौहान

प्रकाशन सलाहकार
शंकर कोरेंगा

विडियो संपादक
कपिल अत्री

परामर्श संपादक
मोहम्मद इस्माइल

मुंबई प्रमुख
नरेंद्र पाटिल

विज्ञापन के लिए whats app करे 9971229644 YouTube/Asatya Bharat

Download E-Copy From - www.yatramantran.com

हमें मेल करें या अपना नाम हमारी फ्री सर्कुलेशन सूची में शामिल करें / प्रेस विज्ञप्ति यहां भेजें

yatraamantran@gmail.com

प्रकाशक का पता:
दुकान नंबर बी 1, प्रिविया मॉल, पीसीएमसी के पास, आरटीओ,
सेक्टर 6, मोशी प्राधिकरण, पुणे 411062

तमाशबीन है भारत की जनता

देश में मेडिकल आपातकाल को लगे दो साल होने वाले है पर किसी ने नरेंदर दामोदर दास मोदी से पूछा है की यह आपातकाल कब हटेगा। आपातकाल का मतलब होता है मौलिक अधिकारों का हनन। तो कब तक मौलिक अधिकारों का हनन और उल्लंघन दोनों होता रहेगा। देश की जनता तो तमाशबीन है। मौलिक अधिकार पर संविधान में हमे क्या मिला है, यह समझने की फुरसत शायद ही किसी के पास हो। इन्हे तो जैसे चाहो नियंत्रित कर लो। समाज में असमानता और विवेकहीनता की पराकाष्टा भी हम सब ने विगत दो वर्षो में देखा और महसूस किया। ऐसे समय में युग परिवर्तन की लकीर खींचनी हो तो मात्र हम उम्मीद गुलाम भारत के क्रन्तिकारी से कर सकते है। इसलिए देश जब आजादी का अमृत महोत्सव मना रहा है तब हम मानते है की गुलाम भारत में आजादी का शंखनाद करने वाले भारत के महान क्रांतिकारिओं को उनके अविस्मरणीय योगदान के लिए हम सब यात्रा आमंत्रण के इस विशेषांक के माध्यम से नमन करे। इसके आलावा हम उन एक करोड़ प्रवासी मजदूरों को भी याद करे जो राष्ट्र निर्माण में अहम् भूमिका अदा करते है पर इन्हे ही सबसे ज्यादा प्रताड़ित होकर हजारो किलो मीटर की यात्रा विस्थापितों की भांति करनी पड़ी।

जरूरी है की समय जब इतिहास के देहलीज पर देश के लिए समर्पित जन मानस को खोज रहा होगा तब यही महान व्यक्तित्व सबसे आगे दिखाई दे। क्युकी अन्याय के खिलाफ केवल कुछ ही आवाज उठती है और उन्हें प्रतिस्थापित करना वर्त्तमान और भविष्य के लिए अति आवश्यक है। विगत दो वर्षो में राष्ट्रवाद के धरातल पर कुछ लोगो ने बेहद ही अभूतपूर्व और साहसी कार्यो को अंजाम दिया है। उनसे देश का परिचय होना लाजमी है और यह पत्रिका उस और एक छोटा सा कदम भर है।

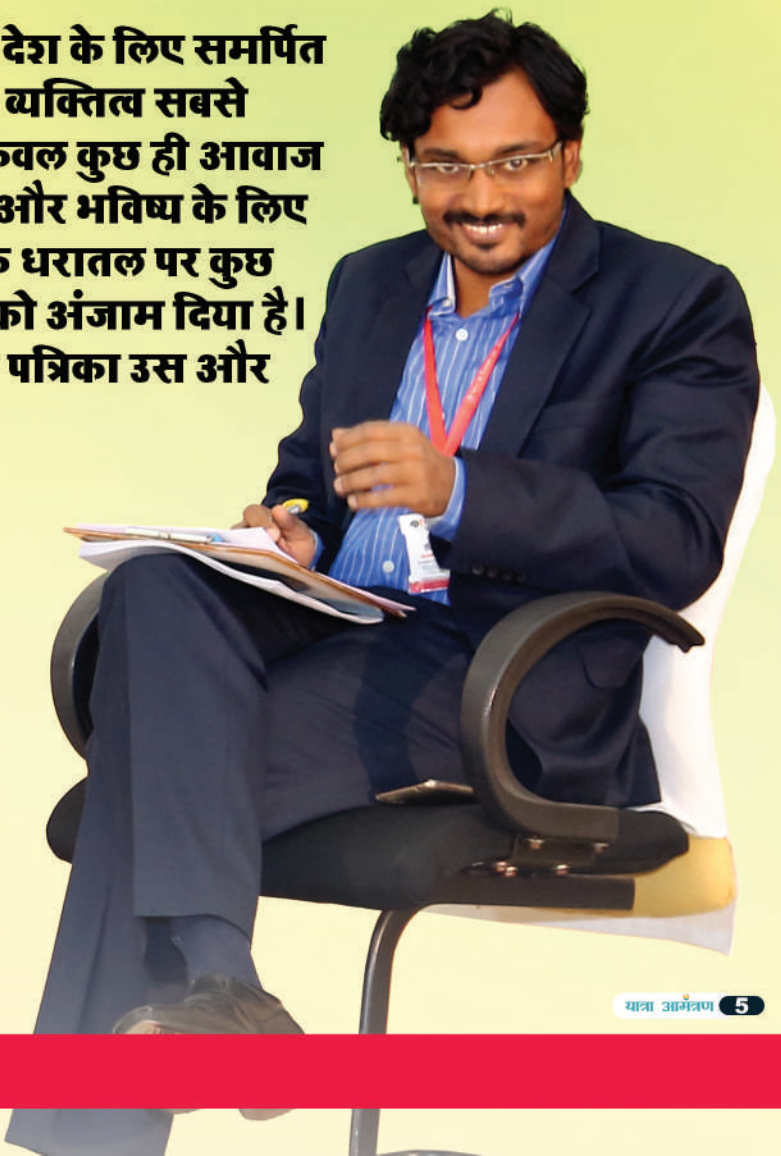

बिस्वदीप रॉय चौधुरी
संपादक

प्राकृतिक चिकित्सा के महानायक

डॉक्टर बिस्वरुप रॉय चौधरी

विश्व विख्यात चिकित्सा पोषण विशेषज्ञ

डॉ. बिस्वरूप राय चौधरी ने मधुमेह में पीएच.डी. उपाधि हासिल की है। वे अन्तर्राष्ट्रीय रूप से प्रशंसित मेडिकल पोषणविद हैं जो जीवनशैली रोगों के उपचार हेतु अपनी क्रान्तिकारी डीआईपी डाइट प्रोटोकॉल के लिए सुविख्यात हैं। वे 25 से अधिक पुस्तकों के लेखक हैं। अमेजॉन पर सबसे अधिक बिकने वाली श्रेणी में उनकी नयी पुस्तक "360 पोस्च्युरल मेडिसिन है। यह भारत में पोस्च्युरल मेडिसिन पर लिखी जाने वाली पहली पुस्तक है। उनके केन्द्र स्विट्जरलैंड, मलेशिया, वियतनाम और भारत में स्थापित हैं। वर्तमान समय वे भारत में पाँच कोविड-19 केयर सेन्टर और 100 बेड वाले "हॉस्पिटल एंड इंस्टिट्यूट ऑफ इंटीग्रेटेड मेडिकल साइंसेज (HIIMS) का संचालन कर रहे हैं। भारत में पोस्च्युरल मेडिसिन का उपयोग करने वाला यह एकमात्र अनूठा अस्पताल है। वे लिंकन यूनिवर्सिटी कॉलेज, मलेशिया और श्रीधर यूनिवर्सिटी, भारत के साथ भी संयुक्त हैं और इनके माध्यम से वे मेडिकल पोषण एवं आपातकालीन जीवनरक्षक प्रशिक्षण कार्यक्रमों का आयोजन करते रहते हैं। 20 जुलाई 2021 को भारत सरकार के आयुष मन्त्रालय के अन्तर्गत "नेशनल इंस्टिट्यूट ऑफ नेचुरोपैथी, पूणे द्वारा उनके एन.आई.सी.ई. प्रोटोकॉल को फ्लु, इन्फ्लुएन्जा लाइक इलनेस (ILI) व कोविड-19 के लिए प्रभावशाली उपचार के रूप में वैज्ञानिक रीति से मान्यता दी गई है।

कोरोना काल के दौरान डॉक्टर बिस्वरुप रॉय चौधरी के वह बोल जो इतिहास में दर्ज हुआ

☑ आरटी पीसीआर टेस्ट को दुनिया में किसने मंजूरी दी , जवाब है किसी ने भी नहीं ,
स्वयं इसके निर्माता केरी मुलर इसकी मंजूरी नहीं देते है

☑ यह जो फोन में रिंगटोन कोरोना के प्रचार को लेकर सुनते है यह सिर्फ तीन देश ,
भारत , बांग्लादेश और पाकिस्तान में चल रहे है

☑ यह पीपीई किट पहनकर जो डॉक्टर जोकर की तरह दीखते है ,
यह पीपीई किट किसने मंजूर किया है , जवाब है किसी ने भी नहीं ,
सही मायनो में यह काम ही नहीं करता है

☑ राजनैतिक रैली से कोरोना कैसे गायब हो जाता है ,
यह सिर्फ भगवान् जानता है और कोई नहीं जानता है

☑ हमने यह सुना है कोरोना रात को आता है इसलिए रात को कर्फ्यू
लगा दिया जाता है , रात का कर्फ्यू पूरी दुनिया में कहा कहा लगाया जाता है ,
यह सिर्फ भारत में लगाया जाता है

☑ मुर्दा कैसे कोरोना का प्रचार कर सकता है। एक मरा हुआ व्यक्ति उतना ही
कोरोना फैला सकता है जितना यह टेबल चेयर फैला सकता है।
एक मरा हुआ व्यक्ति का शरीर कोरोना का प्रचार प्रसार नहीं कर सकता है।

☑ बीस दिन के अंदर आरोग्य सेतु एप्प उतार दिया गया था वह भी 12 भाषाओ में।
जबकि ऐसा एप्प अमेरिका जैसा देश पूरी ताकत लगा दे तो भी एक साल लग जायेगा।
कैसे बना होगा , जादू से बना होगा।

☑ मॉडेर्ना का वैक्सीन २५ फरवरी को तैयार था मानव परीक्षण के लिए
जबकि पांच साल लगते है इसी काम के लिए।

☑ क्या आईसीएमआर कहता है की हर एक मौत कोरोना की मौत बताना है।
मई महीने में आईसीएमआर ने अपने दिशानिर्देश में कहा की भारत में
जितने भी मौते हो उन्हें कोरोना की मौत बता दो।
डॉक्टर को आदेश दिया हुआ है

☑ क्या कोरोना वैक्सीन में गर्भवती गऊ माता को वध करके ,
उसके अंदर अजन्मे बछड़े को खींच के निकाल के , जिन्दा अवस्था में
उसके दिल में छेद करके उसके खून से क्या वैक्सीन बन रहा है।
उत्तर है हां।

आयुर्वेद की ताकत से बनेगा आरोग्य भारत

आयुर्वेद की बात करे तो आयुर्वेद अपने आप में सम्पूर्ण विज्ञानं है । सबसे पहले कोविद को महामारी कहना ही गलत है ।आयुर्वेद के दृष्टि से देखोगे तो यह एक साधारण सा सर्दी खासी जुकाम है। यह पहले भी हुआ करता था पर लोग इसे गंभीरता से नहीं लेते थे। इस बार मेडिकल माफिया के हाथो में पूरी दुनिया खेली है। जो एलॉपथी है और जो बड़े बड़े मेडिकल माफिया है वह इसकी तैयारी कई सालो से कर रहे है। इतिहास में देखो तो अंग्रेजो ने ढाई सौ सालो तक राज किया, उसे से पहले अस्सी साल पुतर्गाल ने राज किया, लगभग सत्तर साल फ्रांसीसी रहे, सत्तर साल डच रहे। तो चार सौ साल अंग्रेजी गुलामी में भारत रहा । इंग्लैंड वाले अंग्रेजो ने योजना बना के भारतको हमेशा गुलाम रखाने की तरफ काम किया। जैसे की अठरह सौ छियानवे में एक पान्डेमिक एक्ट बना। और मैं प्लान्डेमिक एक्ट बोलता हु। उस समय पलेग फैला था। उस समय पान्डेमिक एक्ट को लागु करके आयुर्वेद को पिछड़ी पद्धति घोषित कर दी। तो जितने पढ़े लिखे लोग थे वह सोच रहे थे की हम देश की मदद कर रहे है उन्होंने आयुर्वेद के वैध या जानकारों की शिकायत की। तो इन वैधो को जेल में डाल दिया गया, फांसी दे दी गयी, आयुर्वेद को खातम करने की साजिश शुरू हुई। फिर दूसरी साजिश शुरू हुई उन्नीस सौ चालीस में ओषधि और चमत्कारिक उपचार अधिनियम बनाकर। इसी अधिनियम को १९५४ में संशोधन करके हु बी हु लागु कर दिया गया। यह दोनों अधिनियम के अनुसार आप आयुर्वेद के माध्यम से आप किसी भी तरह के किसी भी तरह के इलाज नहीं कर सकते हो। इस महामारी में आयुर्वेद को नवाचार में न शामिल करना बड़ी गलती है। इसमें मृत्यु दर०.१ प्रतिशत है। आप एक हजार लोगो पर प्रयोग करोगे तो लगभग अस्सी प्रतिशत लोग तो अलक्षणी होते है जिनके अंदर कोई लक्षण ही नहीं आते है, लेकिन संक्रमण होता है उनके अंदर। वह पता ही नहीं चलता है क्युकी आप थर्मामीटर से जांच करते हो। जो बीस प्रतिशत बचते है उनमे से बारह तेरह प्रतिशत को सौम्य लक्षण आते है , दो तीन प्रतिशत को थोड़े ज्यादा लक्षण आते है , और दो प्रतिशत ज्यादा बीमार होते है है। लगभग एक प्रतिशत लोग मरते है। तो पॉइंट एक प्रतिशत आएगा इसका मृत्यु दर। तो सोचो कहा से यह महामारी है। आयुर्वेद में कहा जाता है की उपवास करना ही परम औषधि है।लोगो ने खुद ही अपने आप को घर में रह कर हल्दी, काली मिर्च, अदरक, लौंग मिलाके काढ़े बनाये और खुद कोस्वस्थ किया। जो अस्पताल गए वह मरे क्युकी मई २०२० को लांसेट का जर्नल छपा था की पूरी दुनियामें चालीस सालो का शोध है की कॉम्बिनेशन की दवाई दी गयी यानि की क्लोरोक्वुएन और साथ में कोई भी एंटी बायोटिक दी गयी तो छह में से एक की मौत हुई। आयुर्वेद को शामिल न करना भारत सरकार की बहुत बड़ी गलती है। पूरी की पूरी साढ़े पांच साल के एलॉपथी की पढाई में डॉक्टर को डाइट का चार्ट पढ़ाया ही नहीं जाता है। सिर्फ कैलोरीकांसेप्ट है, ब्रेड में सौ कैलोरी है, चपाती में सौ कैलोरी है, लेकिन आप खुद सोचो, सेब चपाती और ब्रेड क्या एक चीज है। जो महाविद्यालय है वह फार्मा कंपनी के है। इनको माफिया नियंत्रित करते है। महाविद्यालय भी इनके है, पढाई भी इनके है और वही सिखाते है जो वह सीखाना चाहते है। सरकार को आयुर्वेद को पहली चिकित्सा पद्धति घोषत कर देना चाहिए।

आचार्य मनीष

एमएससी (खाद्य और पोषण)
प्राकृतिक चिकित्सा और आयुर्वेद में मानद पीएचडी
हर्बल मेडिसिन में मानद पीएचडी।

नाम : डॉ तरूण कोठारी

एमबीबीएस एम डी

निर्भीक चेतावनी और चुनौती के प्रणेता

वैक्सीन से लाखो की संख्या में मौते हुई है ,उनको मुआवजा दिया जाये , वैक्सीन से शरीर पर खराब असर पड़ता है , ऐसे लोगो को जानता हु जिनके आँख का अस्सी प्रतिशत दृष्टि जा चुकी है , वह एक आँख से कैसे काम करेगा , ऐसे लोगो को जानता हु जो एक हाथ से पक्षाघात हो गए है , अपाहिज हो गए है , कई महिलाओ का गर्भ गिर गया है , इन सब लोगो को उचित मुआवजा मिलना चाहिए। वैक्सीन के निर्माण में गायो का कतल हुआ है , सरकार ने भी माना है , गाय के रक्त से सीरियम बनाया गया है ,सरकार हमारे देश की जनता से इस बात के लिए माफी मांगे और यह बात सार्वजनिक करे की कितने गऊ माता का कतल इन्होने किया है। आपदा प्रबंधन अधिनियम 2005 में यह नियम है की तालाबंदी से व्यपारिओ का नुक्सान सरकार को पूरा करके देना होगा। हम इस कानून की जानकारी लोगो को दे रहे है ताकि उनके नुक्सान की भरपाई हो सके। तीन साल की बच्ची को इसलिए स्कूल से निकाल दिया क्युकी उसने मास्क नहीं पहना था। बच्चो का शरीर विकास के प्रक्रिया से गुजर रहा होता है , ऐसे में उनके शहर में प्राणवायु की जरूरत पूरी होनी चाहिए। तो बच्चे मास्क के कारण जिस मानसिक पीड़ा से गुजर रहे है उसकी भी भरपाई होनी चाहिए। सरकार लोगो को बताये की वह वैश्विक ताकतों के दवाब में आकर उन्होंने यह सारा कुछ हुआ। मैं राजीव दीक्षित को काफी लम्बे समय से सुनता आ रहा हु। क्युकी राजीव जी काफी कुछ बताते थे और दोस्तों ने भी तालाबंदी और महामारी के बारे में जानकारी दी। जब चीन से इसकी शुरूवात हुई , वहा से तालाबंदी की शुरूवात हुई है। मैं डॉक्टर हु और मुझे मालूम है की इस तरह से आप बीमारी को ठीक नहीं कर सकते है और ना ही यह इलाज का कोई तरीका है। हमने भारत सरकार के साथ पत्राचार किया। ताकि उन्हें बताया जा सके की तालाबंदी से कुछ होने वाला नहीं है। जब हमे जवाब नहीं मिला तब मुझे लगा की सरकार इसमें मिली हुई है। इसके बाद मैं सीधे लोगो से इस बारे में संवाद स्थापित करने के दिशा में काम किया। हाल ही में दिल्ली सचिवालय के बाहर प्रदर्शन किया। इसके बाद चालान की रकम २ हजार से कम करके पांच सौ कर दिया। जनता जागे तो बात बनती है। हमारा लक्ष्य सरकारों को सन्देश देना है। गिरफ्तारी से डरना नहीं है। आंदोलन में यह तो होता ही है। हम आजादी की लड़ाई लड़ रहे है। जो लोग चाहते है की हमारी आने वाली पीढ़ी स्वंतंत्र रहे तो उसके लिए तो लड़ाई लड़नी पड़ेगी। बड़े युद्ध में छोटे मोटे आहुति तो देनी पड़ेगी। हम सभी व्यापारी भाईओ से कहने वाले है की जीएसटी देना बंद करो।

एक तरह से यह सविनय अवज्ञा आंदोलन है।

सिर्फ नाम से ही नही , विचारो से भी आजाद

आज सबसे ज्यादा जरूरी है हम अपनी जिन्दगी रसायन मुक्त करे। हमे विष मुक्त हवा मिले , वातावरण मिले, भोजन मिले , इस तरफ ध्यान रखना होगा। हमारा समग्र विकास में भोजन सबसे आवश्यक है , मैं इसे छह पहिये वाला वाहन कहता हु। इसमें सबसे पहले का पहिया यानि पौधे आधारित भोजन जिसके बारे में डॉ बिस्वरूप कह चुके है। यह चीन स्टडी का भी एक साफ सन्देश था। पौधों से सम्बंधित भोजन ग्रहण करो और तंदुरस्त रहो। औषधीय पौधा इस वाहन का दूसरा पहिया है। हमारे आस पास सैकड़ो गुणकारी औषधीय पौधे है। हमारे अंदर जो भूसा भर गया है की कैप्सूल, टीका, गोली हमको ठीक करेंगे , वह भूसा बाहर निकाले। दैनिक भोजन के साथ औषधीय पौधों का सेवन करे । शारीरिक गतिविधि और व्यायाम करे और चौथा मन प्रबंधन यानि तनाव मुक्त जीवन जीना। खुशी का मिलना आसान है और आसानी से मिल जाती है। अब रह गए इस वाहन के दो पहिया। इसमें से एक पहिया है चिकित्सा पद्धति जैसे आयुर्वेदा , प्राकर्तिक चिकित्सा, योगा, होमियोपैथी। यह सब हानिरहित पद्धति है। और आखिर में एलॉपथी को चुने। क्युकी एलॉपथी के खराब असर होते है। इसे हम समग्र स्वास्थ्य कहते है। अगर आप समग्र स्वास्थ्य को चुनोगे तो बीमारी से नहीं मरोगे केवल बुढ़ापे से मरोगे। वैज्ञानिको ने साबित किया है की मानव शरीर एक सौ पच्चीस साल के लिए बनी है और बुढ़ापा सौ साल के बाद आती है। सौ साल से पहले जो मरता है वह बीमारी से मरता है और सौ साल के बाद जो मरता है वह बुढ़ापे से मरता है। कोरोना के चलते सरकार ने जो भी निर्णय लिए उस से सिर्फ तबाही आई। छोटे उद्यमी जैसे इनके दुश्मन बन गए है। जो अपनी जीविका सवम जुटा लेता था वह सब इनके आँख के किरकिरी बन गए। कॉर्पोरेट को लगा की इनको खतम करना है , इनको इस तरह से कमाने के मौके नहीं देना है। वह काम छीनने के लिए इन्होने योजना बनाई और इनका काम छीनते जा रहे है । जो आजाद सोच के व्यापारी थे उनके जीवन को इन्होने तहस नहस कर दिया। जीवन का आधार आर्थिक मजबूती होता है और अगर वह कमजोर हो जायेगा तो सामाजिक असर भी दिखेगा। हमारे शिक्षा स्तर को खतम किया जा रहा है। इनका लक्ष्य की बड़े उद्योगपति घरानो के हाथो सब कुछ दे देना है। यह किसानो के भी दुश्मन है। यह किसानो की जमीन छीनना चाहते है। इनको सिर्फ बीस प्रतिशत गुलामो की तरह काम करने वाले लोग चाहिए। बाकि जो रिक्शा चलाने वाला , छोटा व्यापारी इनके लिए बेकार है। इनको मारो बीमार करके , आर्थिक हालत खराब करके , न इनके पास पढाई रहे , न घर। उनको राजनेता एक मोहरे के तौर पर चाहिए। इनके लिए राजनैतिक दल भी कूड़ेदान की तरह है। इनको लगता है की हमारे सिवा किसको को जीने का हक नहीं है। अपने आस पास देखो सारे मौलिक अधिकार खम हो रहे है। यह भयंकर किस्म की गुलामी है।

नाम : अमर सिंह आजाद

एमबीबीएस एमडी पीडियाट्रिक्स एमडी
कम्युनिटी मेडिसिन

नाम : डॉ नीलेश पाटिल और डॉ पल्लवी पाटिल
एमबीबीएस डी.ऑर्थो
एमबीबीएस डीएमआरई

जब से कोविद महामारी की उत्पति भारत में हुआ है तब से हमने एक हजार से ज्यादा बेहद गंभीर से सामान्य लक्षण वाले कोविद मरीजो को निरोगी बनाया तीन चरणों के फ्लू डाइट , प्रोन और पंखे के हवादार प्रणाली के माध्यम से और वयक्तिगत परामर्श के द्वारा। यह तो हम सभी के संज्ञान में है ही की पूरी दुनिया में कोविद की सबसे ज्यादा मौत अस्पताल में हुई है। इस के पीछे के तथय जो हमने संज्ञान में आये वह निम्लिखित है

01: संचार माध्यम और विश्व स्वास्थ संस्था द्वारा कोविद के दुष्प्रभाव का झूठा प्रपंच रच के भय और अवसाद का प्रचार आम जन मानस के मध्य करना।

02: वैश्विक स्तर पर यह बताने की चेष्टा की गयी है की इस बीमारी का इलाज एलॉपथी के अलावा कही और मौजूद नहीं है

03: मृत्यु के ऐसे दृष्टिबंधक आकड़ो का मायाजाल बुना गया जो दरसअल वास्तविक थे ही नहीं।

04: एलॉपथी के अलावा किसी और चिकित्सा पद्धति को पूरी तरह से नकारना और उपेक्षित करना।

05: एलॉपथी के दवाइओ का अनियंत्रित अति प्रयोग अस्पतालों द्वारा किया जाना।

06: प्राणवायु सिलिंडर का अघोषित अति प्रयोग मरीजो पर करना भी प्रमुख कारण रहा है।

07: मरने के कगार तक सामाजिक एकाकीपन का नियम कोरोना के मरीजो के लिए मौत की वजह बनी।
मानव जीवन सामाजिक एकाग्रता के मध्य अपने भाव और सदभाव से पोषित होता है।
उसे सामाजिक ताने बाने से दूर उसके परिवार से अलग कर देने से व्यक्ति अपने उदासी और हताशा से ग्रसित होकर सवम ही कोरोना का मरीज बन जाता है।

08: एलॉपथी का चिकित्सा प्रणाली कुछ ही समय पहले आया है पर प्राकर्तिक चिकित्सा और आयुर्वेद युगो पुरानी सबसे तटस्थ और सटीक आरोगय जीवन का मूल मन्त्र रहा है। पर कोरोना में सिर्फ एलॉपथी के लिए ही सारे मौके प्रमुखता से उपलब्ध कराये गए।

09: गंभीर से गंभीर रोगो के इलाज में हमारे समाज में एलॉपथी का एकाधिकार देखा जा सकता है। मानसिक गुलामी इस प्रकार से एलॉपथी के चाटुकारिता में व्याप्त है की चिकित्सक को किसी और प्रकार के समान्तर चिकित्सा प्रणाली की न जानकारी उपलब्ध कराइ जाती है और न ही किसी प्रकार के शोध कार्यो को प्रोत्साहित किया जाता है।

नाम : सुमित आजाद

शैक्षणिक योग्यता: बी.टेक (रसायन इंजीनियरी)

सच के साथ जिन्दगी मेरी

जब पहली बार तालाबंदी हुई तो मैं भी काफी भयभीत था। इसके अलावा मैं स्कूल भी चलाता था तो मेरा स्कूल भी बंद हुआ। अप्रेल महीने में डॉ बिस्वरूप सर की वीडियो देखि जो बिलकुल मुख्यधारा के टेलीविजन चैनल से हट के थी। मेरा खुद का चैनल नहीं था पर मैं CNN देखता था। पर डॉक्टर बिस्वरूप बिलकुल अलग ही बात बता रहे थे। और डॉ बिस्वरूप सर के डाइट को मैं पहली भी ले चूका था। इसके बाद मैंने शोध करना शुरू किया तो मेरी आखे खुल गई। एक ऐसी सच्चाई जो पुरे विश्व से छुपाई जा रही है और कितनी सफाई के साथ गोदी मीडिया झूठ परोस रही है। इसके बाद मैंने अपने चैनल के माध्यम से इस पर बात करनी शुरू की। इसमें डॉ बिस्वरूप सर की भी मदद् ली। इसके बाद बहुत सारे लोग मेरे साथ जुड़े। मुझे न्यू वर्ल्ड आर्डर के बारे में पता चला। रॉकफेलर फाउंडेशन की जानकारी मिली , वर्ल्ड बैंक कैसे हमे नियंत्रित करती है , कोरोना साजिश क्या है, वैक्सीन लाने का मकसद क्या है ? मेरे जैसे पढ़े लिखे व्यक्ति को नहीं मालूम था तो पता नहीं दूसरो को कितना पता होगा। वही से मैंने कोरोना साजिश के खुलासो पर काम करना शुरू किया। मैं बहुत सौभायशाली हु की बहुत सारे लोगो की सोच बदल पाया हु। अगर भविष्य के बारे में कहु तो देखिये जनता जैसे जैसे जागने लग गयी है कोरोना साजिश के बारे में , उस से वैक्सीन की जबरदस्ती रूक गयी है , कई राज्य सरकार को मानना पड़ा की हम वैक्सीन के जबरदस्ती के खिलाफ है। पर सरकार वापस अगली महामारी कह के षड्यंत्र रचते रहेंगे। इसके लिए अभी से सावधान रहना पड़ेगा। सतर्क रहिये तो आने वाले षड्यंत्र से भी मुकाबला कर पाएंगे।

नाम : विकास पाटनी

अखिल भारतीय गौ क्रांति मंच , राष्ट्रीय महासचिव

शैक्षिक योग्यता: जनसंचार और पत्रकारिता में पीजी

मिथ्या के आगे मौन रहना मौत के समकक्ष

विगत कई वर्षो से , जब से हमने वयवस्थाओ को समझा है , हम राजीव दीक्षित जी के मूल्यों के आधार पर कार्य कर रहे थे। 2009 में जब स्वाइन फ्लू आया उस वक्त भी यही बात होती थी की स्वाइन फ्लू अपने आप में षड्यंत्र है। और उस वक्त भी राजीव भाई ने पूरा आंदोलन खड़ा किया था और यह बताया गया था की यह बेवकूफ बनाने का काम किया जा रहा है बड़ी दवा कंपनी द्वारा। यह बड़ी कंपनी हर पांच दस साल में वायरस बनाते रहती है। ठीक उसी तरह से 2019 में जब यह पान्डेमिक को शुरू किया तो हमने भी अपना काम शुरू कर दिया था। और इसी दौरान हमे डॉ बिस्वरूप जी के वीडियो भी मिलने शुरू हो गए थे। जब हमने देखा की डॉक्टर बिस्वरूप जी बहुत अच्छे से एक्सपोज कर रहे है तो हमने अपनी पूरी टीम , इसमें सोशल मीडिया में राजीव भाई का सबसे बड़ा समूह हम चलाते है , तो हमने पुरे ताकत से डॉक्टर साहब के समर्थन में काम शुरू किया। पिछले दो साल में जितने लोगो को टिका दिया गया है , उनमे से कुछ की मौत हो गयी है , पर जो लोग सोचते है की वह सुरक्षित है वह सुरक्षित नहीं है। वह दवा कंपनी के जाल में फस चुके है। आने वाले दस साल में हर तरह के मरीजो की संख्या दस बीस गुना रफ्तार से बढ़ेगी। सीधे तरह से हम इसको गलत मानते है। दुनिया को न्यू वर्ल्ड आर्डर की तरफ ले जाने का तरीका है जिस पर अभी वर्तमान प्रधानमंत्री ने अपना सम्बोधन दे रखा है। यूरोप और भारत में एक अंतर निकल के आता है। यूरोप का मानस और भारत का मानस अलग है। भारत में जो भी चीज बिकती है लोग उस तरफ एक दम से दौड़े चले जाते है। भारत धर्म प्रधान देश है। यहाँ पर श्रद्धा विश्वास जल्दी फैलता है। यहाँ पर एक बात सौ बार बोल दिया जाये , हजार बार बोल दिया जाये तो यहाँ का व्यक्ति उसे परम सत्य मान लेता है। मीडिया के प्रति लोगो की निष्ठा इतनी है की इडियट बॉक्स में अगर यह भी कह दिया जाये की व्यक्ति अपना मल खाकर सही हो सकता है तो भारत में कई लोग वह भी करने लग जायेंगे। यही दो सालो में हुआ वार्ना ब्रेन वाश करना इतना आसान नहीं है। मीडिया यह इसलिए भी कर पाया क्युकी कई लोगो की आस्था अपने नेता के प्रति भी है। इसके आलावा धार्मिक संघटन ने भी इसे प्रायोजित करवाया। मैंने तो एक **RTI** भी लगवाया था जिस पर देश भर में हंगामा हुआ था क्या गाय के रक्त का प्रयोग किया गया था वैक्सीन बनाने के लिए। सरकार ने पूरा मुद्दा राजनैतिक बताके के कांग्रेस के माथे मढ़ दिया। डॉ बिस्वरूप जी भी कह रहे थे यही बात। पर जब **RTI** से खुलासा हुआ तब भी मीडिया के माध्यम से लोगो का ध्यान भटका दिया। तो यह मीडिया पूरी तरह से बिका हुआ है।

नाम : राजेश आर्य

शैक्षणिक योग्यता: बी.सी.ए., एम.सी.ए., एम.एससी.(आई.टी.), एम.ए.(अंग्रेजी), एलएलबी

मन से कोशिश तो विजय संभव

मै राजेश आर्य, मैं पेशे से एक मोटिवेशनल स्पीकर हूँ, मैं हमेशा लोगो को मोटीवेट और जागरूक करता आया हूँ , मैं हमेशा से ही डॉ बिस्वरूप रॉय से प्रेरित रहा हूँ, मैंने देखा कि सच के लिए डॉ बिस्वरूप रॉय चौधरी लड़ रहे हैं और उनकी बातों पर भी बहुत रिसर्च किया कि उन्होंने कितनी मेहनत के साथ लोगो को समय समय पर सच्चाई का आइना दिखाया है इसी सिलसिले में मैंने भी,अपने बढ़े चलो न्यूज चैनल के माध्यम से डॉ. बिस्वरूप रॉय की सोच का विस्तार करना सुरू किया, आज हम सब को गर्व है कि डॉ. बिस्वरूप रॉय की वजह लाखों लोगो की जान इस दिखावटी महामारी के बीच बची है.मैं इस सब के लिए डॉ. बिश्वरूप रॉय और उनकी टीम का बहुत बहुत आभारी हूँ बढ़े चलो एक सकारात्मक विचार है यही विचार हमारे जीवन की आधार शिला है। यही सोचते हुए मैंने अपनी मासिक पत्रिका प्रकाशित की जिसका नाम है "बढ़े चलो" इस पत्रिका में अलग अलग प्रकार के प्रेरक लेख होते है जो इंसान को शारीरिक और मानसिक रूप से आगे बढ़ने को प्रेरित करते हैं इसके साथ ही हम इसी विचार को डिजिटल माध्यम बनाकर अपना एक न्यूज चैनल भी चलाते हैं जिसका उद्देश्य भी लोगो को खबरों के माध्यम से जागरूक करना और आगे बढ़ाना हैं और हमें खुशी है कि हम अपने मकसद में बखूबी कामयाब हो रहे हैं

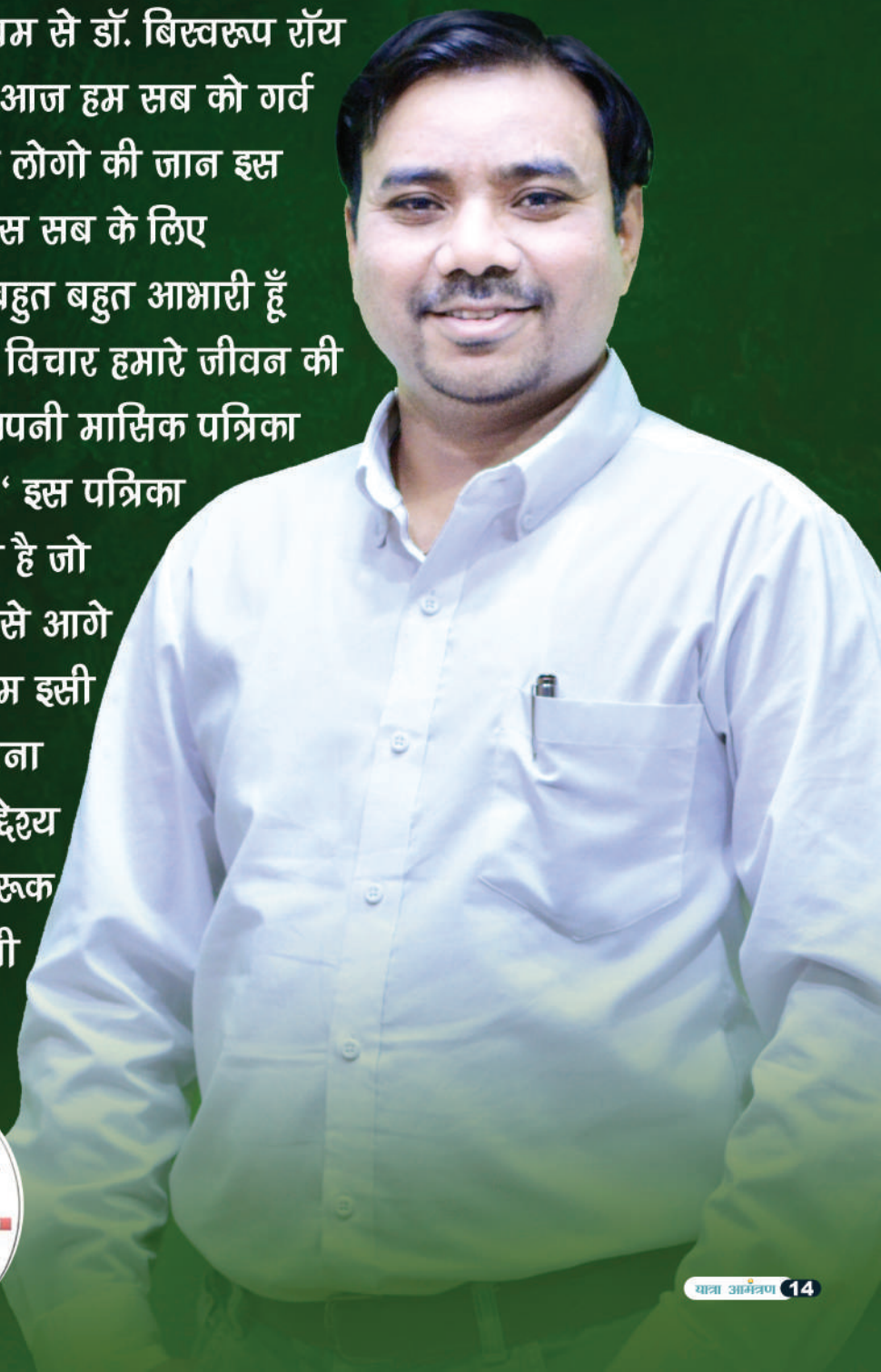

नामः सुरेंदर वत्स

एमए (संस्कृत), बीएड, पीएचडी (पब्लिक स्पीकिंग)

शब्दों के बाजीगरी के महारथी

कोविद के आने से हिन्दुस्थान के आम नागरिक से लेकर बुद्धिजीवी वर्ग घबराहट में आ गया और समझ में नहीं आया की उसे किस प्रकार की प्रतिक्रिया देनी चाहिए। जबकि उसी समय डॉ बिस्वरूप जैसे एक आद व्यक्ति ने ही कोविद के बारे में साहस के साथ , तर्को के साथ के अपना पक्ष रखा, न केवल रखा , बल्कि रोग प्रतिरोधक अक्षमता बढ़ाने के लिए एक ऐसी डाइट हम लोगो को दी जिसके वजह से हिन्दुस्थान के लाखो लोगो को लाभ हुआ और लाखो लोग स्वस्थ हुए।

नाम : वंदना चड्ढा

शैक्षणिक योग्यता विद्युत इंजीनियर

हमारी युगो पुरानी चिकित्सा पद्धति जन जन तक पहुंचे

हमारे वेदो में आयुर्वेद के बारे में विस्तार से जानकारी समाहित है। परन्तु समय के बदलाव आने के चलते हमारी यह पद्धति जन मानस से कुछ दूरी पर हो गयी है। फरीदाबाद के डॉक्टर श्री बिस्वरूप ने अपने इसी पद्धति को जिवंत रखने की बहोत कोशिशे की है। यदि हम पुराने समय की बात करे तो वैध मरीज का नबज देखके ही बीमारी का पता कर लेते थे और उसी अनुसार इलाज करते थे। इसमें खाने पिने की सलाह भी देते थे। डॉ चौधरी इसी पद्धति को प्रफुलित करने में अपना योगदान दे रहे है। क्युकी एक जानकारी हमारी जड़ी बूटीओ से इलाज करने में सक्षम होता है। डी फाइव हिंदी चैनल की और से मैं वंदना दर्शको को यह बताना चाहती हु आयुर्वेद , प्राकृतिक चिकित्सा के बारे में तर्क संगत प्रचार प्रसार करने में निरंतर प्रयास रत है।

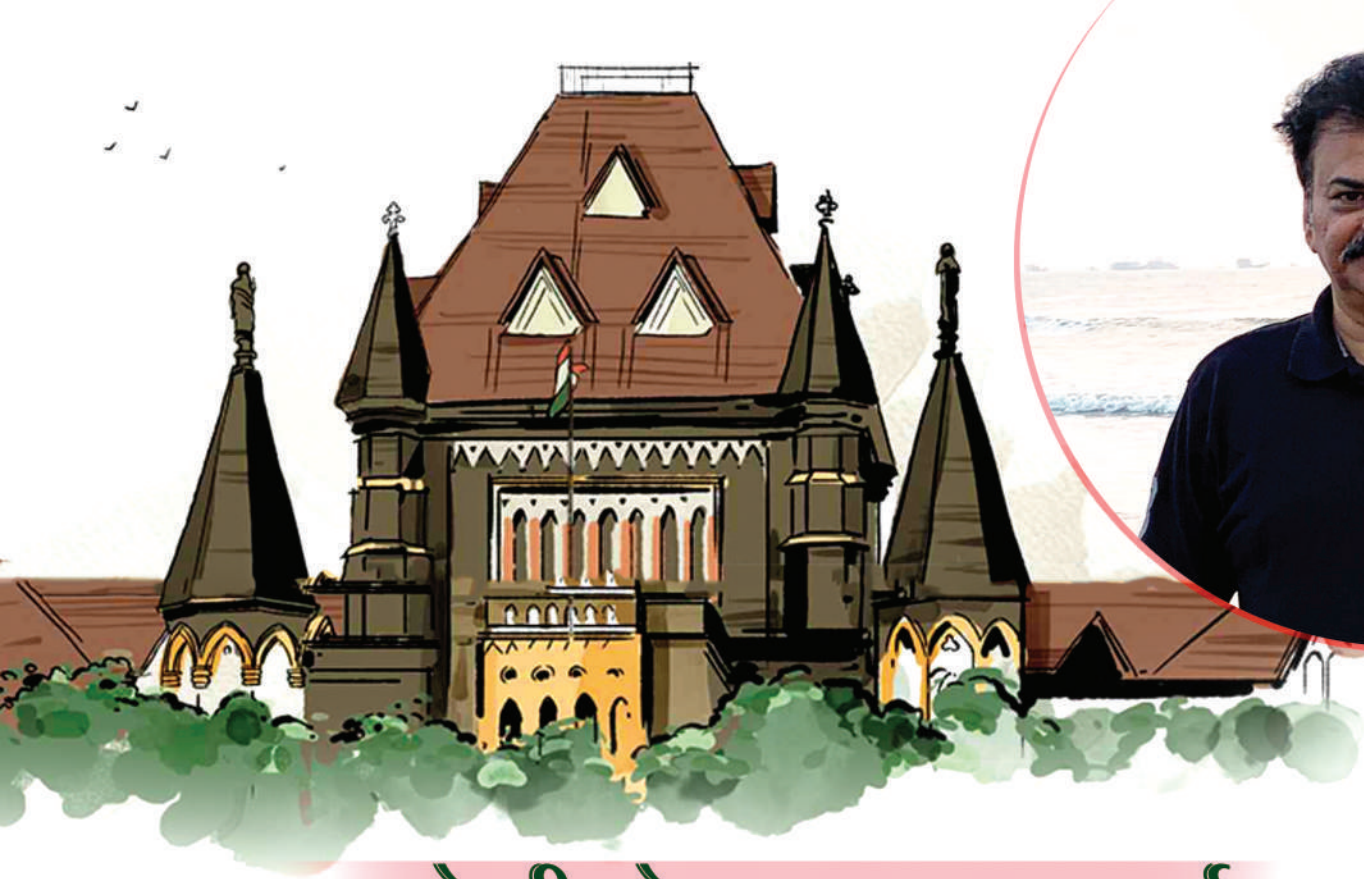

कानून से ही होगा न्याय का मार्ग प्रशस्त

फिरोज मिथिबोरवाला

अव्हेकन इंडिया मुव्हमेंट – राष्ट्रीय संचालन समिति सदस्य । भारत बचाओ आंदोलन – राष्ट्रीय अध्यक्ष
भारत पलेस्टाइन एकजुटता मंच – राष्ट्रीय मंत्रसचिव

मुझे प्रेरणा और विचारधारा की ऊर्जा महात्मा गाँधी , डॉ आंबेडकर , शहीद भगत सिंह और स्वतंत्र संग्राम से मिलता है। मैं उन अंतरराष्ट्रीय मामलों का भी गहन पर्यवेक्षक हूं जहा मानवता पर नरसंहार आतंकवादी हमले का आयोजन वैश्विक कैबेलिस्ट द्वारा किये जाते है। इसलिए जब कोरोना के नाम की फर्जी महामारी आयी तब मुझे समझने में देर नहीं लगी की यह एक और षडयंत्र है नाजी मानसिकता के तानाशाही तरीको का जहा बड़े दवा कंपनी , मेडिकल माफिया द्वारा यह संचालित और प्रतिस्थापित हो रहा है।

इसलिए इस पर हमारी विविध प्रकार की प्रतिक्रिया थी और जन जागृति के लिए आंदोलन आवशयक था। विरोध और अनन्य के खिलाफ लड़ने का एक और बेहतरीन तरीका था की हम कानून का सहयोग ले। हमारा राष्ट्रीय संविधान आजादी के लड़ाई के मध्य और उन आंच से तप के निर्मित हुआ है जो विश्व की सबसे प्रगतिशील कार्य वव्यस्था है जहा पर सबके निजी अधिकार , आजादी और सुरक्षा सुनिश्चित है। हमारे पास एक बेहतरीन कानून के जानकारों का दल था जो इस विषय की गहरी और पेशेवर जानकारी रखता था। और इसी दल के अनुभव और कार्य शैली के कारण हम अदालत में अपना पक्षः मजबूती से रख पाए। हमारी पहली दलील यही थी की हमारा संविधान दो व्यक्ति के मध्य किसी भी तरह का भेद भाव नहीं रखता है और इस तर्क के रौशनी में देखे तो जो नियम कोविद के लागु किये जा रहे थे वह गैर कानूनी और गैर संवैधानिक था , इसमें हमारे मौलिक अधिकारों के हनन का विषय प्रमुख था। इसी बात के मध्य हमने मुंबई के उच्च न्यायालय में अपनी बात रखी और जो जीत हमे मिली वह पुरे राष्ट्र और मानवता को समर्पित है।

हमारा अगला लक्ष्य और योजना राष्ट्र व्यापी आंदोलन खड़ा करना है जिसमे लाखो की संख्या में सदस्य बनाना है और जमीनी स्तर पर एक ऐसा संघटन तैयार करना है जो सरकार, बड़े दवा माफिया , नौकरशाह ,सूचना के बड़े संघटन और जो उद्योगपति इंसानियत को गुलामी देने के विषय पर विचार बना रहा है उनको अनावृत करना और चुनौती देना रहेगा।

अगर साथ रहे तो न केवल इनके बुरे मंसूबो को रोंद पाएंगे बल्कि इंसानियत के लिए एक विजय दर्ज करा पाएंगे। पर यह मार्ग अभी खतरों से भरा हुआ है और हर कदम हमे अंपने विश्वास से बढ़ना होगा।

अशोक भाई पटेल

सत्याग्रही (स्वतन्त्रता व न्याय हेतु अहिंसात्मक रूप से संघर्षरत व्यक्तित्व)

सम्मान की लड़ाई में कोई समझौता नही

गुलामी एवं अन्याय को भय के वशीभूत होकर चुपचाप सहन कर लेना जीवन में एक बहुत बड़ा अभिशाप है। मैं मानता हूँ कि यह मनुष्य की नैतिक कमजोरी भी है। इसलिए मैं सदा ही न्यायोचित स्वतन्त्रता का पक्षधर हूँ और मैं इसे हासिल करने हेतु अहिंसात्मक रीति से संघर्ष करने के लिए भी तैयार रहता हूँ। क्योंकि अन्याय को देखते वा समझते हुए भी निष्क्रिय रहना मेरे स्वभाव में नहीं है। मैं अपने गृह-नगर राजकोट में दुपहिया मोटर साईकिल चलाया करता था। एक बार मेरे मन में विचार आया कि इसे चलाने के दौरान सिर पर हेलमेट पहनने का सरकारी आदेश मेरी आजादी के खिलाफ है। यह तो मेरी इच्छा पर निर्भर होना चाहिए। अत: मैंने इसे खुलेआम नकार दिया और पुलिस मैन को इसकी दण्ड-राशि देने से भी मना कर दिया। तत्पश्चात मुझे न्यायालय में हाजिर किया गया। वहाँ भी मैंने मात्र ३० रुपये का जुर्माना चुकाने से भी इनकार कर दिया बल्कि मैंने न्यायाधीश के समक्ष महात्मा गाँधी, गौतम बुद्ध, स्वामी विवेकानन्द एवं पवित्र पुस्तक गीता की सूक्तियों का हवाला दिया। स्वयं को भौतक शरीर मानना मैंने नामंजूर कर दिया। मेरा यह दृढ़ विश्वास है कि मैं विनाशी शरीर नहीं हूँ बल्कि मैं एक अविनाशी आत्मा हूँ। मैं अनादि व अनंत हूँ। इसलिए इस शरीर को छोड़ने का मुझे कोई डर नहीं है। मुझे नहीं पता कि यह शरीर कब छोड़ना है लेकिन मैं उस क्षण के लिए बिल्कुल निश्चिन्त व निर्भीक हूँ। मुझे ईश्वर में पूर्ण विश्वास है और यही मेरी आन्तरिक शक्ति अथवा आत्म-बल का आधार है।

महात्मा गाँधी, स्वामी विवेकानन्द, गौतम बुद्ध, जीसस क्राइस्ट एवं मुहम्मद पैगम्बर आदि महान समाज सुधारकों ने मेरी भावनाओं व चिन्तन पर गहरा प्रभाव डाला है। ये महामानव हमेशा ही मेरे प्रेरणास्त्रोत रहे हैं। कोरोना वायरस के घिनौने खेल में भी मेरा सामाजिक कर्तव्य-बोध इस विश्वव्यापी साजिश का भंडाफोड़ करने हेतु मुझे निरन्तर हिम्मत प्रदान करता रहा है। इसके प्रारम्भिक दौर में ही मैं समझ गया था कि यह सम्पूर्ण मनुष्य जाति के विरुद्ध किया जाने वाला विशालकाय अपराध है।

नाम : डॉ देवेंदर भलहेरा

शैक्षणिक योग्यता: डीएड, बीएड, एमएड, एमएससी फिजिक्स, पीएचडी, डिप्लोमा इन नेचुरोपैथी

इस बार आर या पार की लड़ाई

प्रश्न : वैक्सीन से बच्चो को बचाने के लिए कारगार उपाय क्या हो सकता है ?
क्या गाँव गाँव अभियान चलाये ?

मेरे विचार : कोई भी आंदोलन चलाने के लिए आंदोलन का मकसद समझाना बहुत जरूरी है। सबसे पहले तो वैक्सीन के दुष्प्रभाव की जानकारी देना जरूरी है। जैसे पुरानी वैक्सीन के क्या क्या दुष्प्रभाव हुए उसको भी देखा जाये। जैसे मीडिया पोलियो वैक्सीन के बारे में दुष्प्रचार करती है की उस से फायदा हुआ है पर यह नहीं बताते है की पोलियो वैक्सीन से कितनो की जाने गई है। तो इसके डाटा तैयार किया जाये और लोगो में बाटे जाये। हम तो गांव गांव जा रहे है। हमारे पास जिला स्तर के कार्यका. रिणी तैयार हो गयी है। एक डिस्ट्रिक्ट से पचास से सौ पूरी तरह से समर्पित कार्यकर्ता है जो हर जगह पर आने को तैयार है। बहुत जल्द बाइस जिलों में सौ लोगो की टीम यानि दो हजार से जयादा कार्यकर्ता होंगे जो कही भी जाने को तैयार रहेंगे। हमारे पास वह लोग है जिन्होंने अपने बच्चो को वैक्सीन नहीं लगवाई। उनके बच्चे अपने पड़ोस के समाज के वोह बच्चे जिन्होंने वैक्सीन ली है, से जयादा स्वस्थ है, खुशहाल है यानि कहे तो आत्मा से जिन्दे है ।

हम लोग कही भी जा रहे है, किसी गांव में तो वहा की संस्कृति को समझे, वहा के स्थानीय निवासी को साथ में जोड़ लिया जाये। यहाँ गांव में लोगो को समझाने के लिए जरूरी है धीरज और समर्पण। गांव का निवासी आपको बहोत इज्जत देता है , आपके समर्पण को देखता है। अगर आप सच्चे मन से जुड़े है तो बहुत सहायता मिलती है। गांव में लोग ज्यादा सक्षम है। शहर में लोगो को अपने पड़ोस के व्यक्ति की जानकारी नहीं होती है तो वह किसी अनजान के लिए क्यों लड़ेगा । शहर का आदमी समस्या से भागने वाले लोगो में से एक है। गांव के लोग चेहरे पर भरोसा करते है। उनको जो समझा रहा है वह अखबार में आया हो टीवी में हो तो जल्दी भरोसा करते है । सरकार इस का फायदा उठाती है। हम इस पर भी गांव के लोगो को समझा रहे है। एक बार गांव का व्यक्ति साथ आ गया तो आखिर सास तक साथ देता है।

पुणे की
सुप्रसिद्ध

काळजे मिसळ हाऊस ®

KALJE
SPECIAL
MISAL

Call Us For
Beverages Outlet
Launching On
New Year
2022.

सुप्रसिद्ध

पैलवान वडा

कोल्हापुरी चवीचा रांगडा !!

Franchise Opportunity
9049487878

Come & Experience It.

Benefit To Get Franchise
- Fastest Growing Misal Brand Among Family.
- Great Taste And Assurence Of Quality.
- Unique Trendy Menu.
- We Provide Training, Marketing, Branding And Support.
- Raw Material Provide By Us.
- Own Production Strength.

Follow Us kaljemisalhause

Shop NO. B1 Privia Mall Near PCMC New RTO
Sector 6 Moshi Pradhikaran Pune 411062.

गुलामी कबूला नही

केंद्र सरकार ने अध्यादेश बनाया राज्यों के लिए उसमे एक बात कह के हाथ झटक लिया की हमने तो कह दिया है की मास्क पहना स्वच्छिक है पर राज्य सरकार अपना निर्णय ले सकती है। फिर केंद्र सरकार की जरूरत क्या है। स्थानीय सरकार जिसमे महानगरपालिका है , इन्होने तो लूट मचा के रखा है। अभी एक विज्ञापन आया है की जनता से वसूली करने के लिए हमको काम पर लोग चाहिए और उनका तनख्वाह दस से बारह हजार है। वसूली करने के लिए भी अब विज्ञापन निकलने लगे है। महाराष्ट्र में यह तानाशाही कहा तक जा सकती है आप देखिये। और क्यों हो रहा है , हम सब शांत बैठे है इसलिए। जिस दिन सड़क पर निकलना शुरू करेंगे , इनको वोट करना बंद करेंगे , इनके बाते मानना बंद करेंगे , अस. हयोग आंदोलन करेंगे , मास्क की होली जलाना शुरू करेंगे , वैक्सीन की होली जलाना शुरू करेंगे तब रस्ता निकलेगा। इनकी कमजोरी क्या है , मतदान।

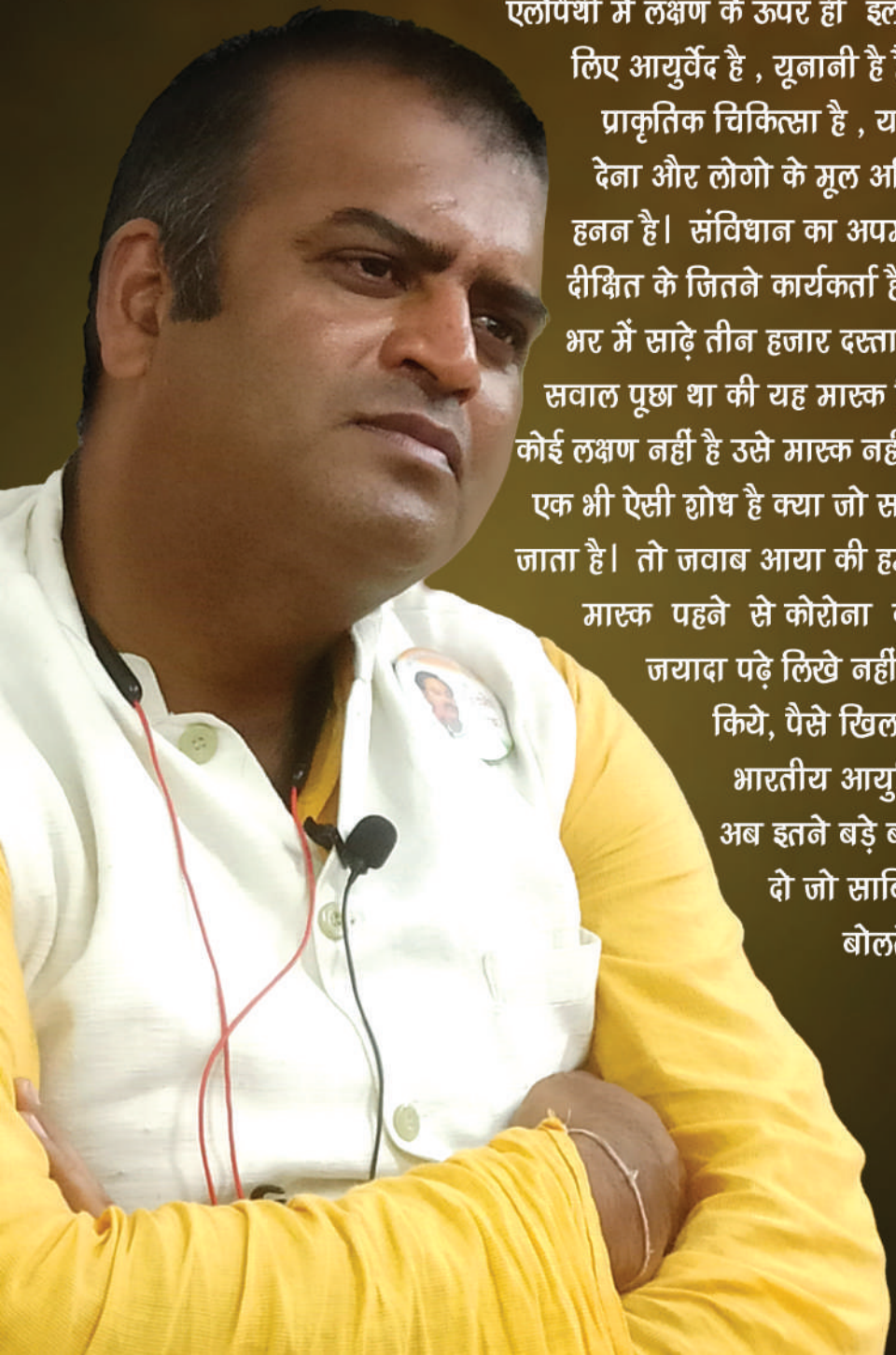

एलोपैथी में लक्षण के ऊपर ही इलाज होता है। तो हमारे देश में सर्दी खासी जुकाम के लिए आयुर्वेद है , यूनानी है है, पंचगव्य चिकित्सा है , हमारे देश में होम्योपैथी है, प्राकृतिक चिकित्सा है , यह सब होते हुए भी सिर्फ एक ही चिकित्सा को बढ़ावा देना और लोगो के मूल अधिकार को छीनना , मुझे लगता है की यह कानून का हनन है। संविधान का अपमान है। मैं तो पुरे सबूत के साथ बोलता हु। राजीव दीक्षित के जितने कार्यकर्ता है वह बिना सबूत के नहीं बोलते है। हमने पुरे साल भर में साढ़े तीन हजार दस्तावेज जमा किये। हमने सुचना के अधिकार के तहत सवाल पूछा था की यह मास्क किसको पहना चाहिए। तो जवाब आया की जिसको कोई लक्षण नहीं है उसे मास्क नहीं पहना चाहिए। फिर हमने पूछा था की आपके पास एक भी ऐसी शोध है क्या जो साबित करे की मास्क पहने से कोरोना का प्रसार रूक जाता है। तो जवाब आया की हमारे पास ऐसी कोई सबूत नहीं है जो साबित करे की मास्क पहने से कोरोना का प्रचार प्रसार रूकता है। हमारे देश में नेता बहुत जयादा पढ़े लिखे नहीं है , लोगो ने वोट दिया आ गए, इधर उधर के काम किये, पैसे खिलाये , शराब पिलाई आ गए। पर जो वैज्ञानिक बैठे है भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद में उन्होंने लिख के दिया। अब इतने बड़े बड़े वैज्ञानिको का अपमान कर रहे है। कोई सबूत तो दो जो साबित करे की बचाव होता है , ऐसे ऊपर ऊपर से क्यों बोलते है। तो मैं तो चाहूंगा की ठोस सबूत पर बात करे।

नाम : मदन दुबे

राष्ट्रीय अध्यक्ष - स्वदेशी सेना

नाम : मोहमद अहमद काजमी

शैक्षणिक योग्यता : पर्शियन भाषा में मास्टर डिग्री

संपादक – स्टार मीडिया वर्ल्ड

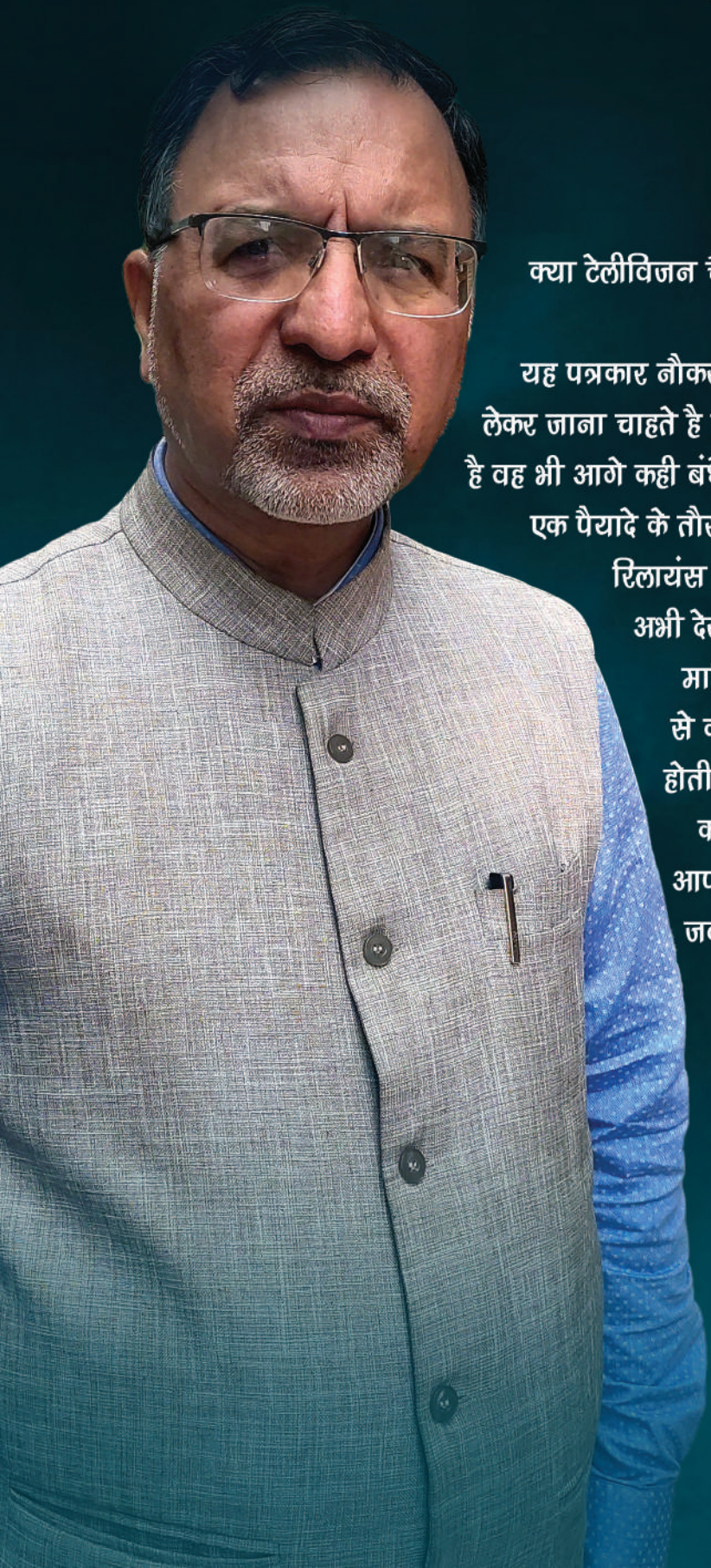

सत्यमेव जयते

क्या टेलीविजन चैनल के पत्रकार सरकार के दवाब में काम करते है या मेडिकल माफिया से पैसे खाकर काम करते है ? या दोनों। यह पत्रकार नौकर है जो उनके मालिक , बिजनेसमैन या उद्योगपति जिस तरफ लेकर जाना चाहते है जाते है। इनकी अपनी कोई हैसियत नहीं है। जो इनके बॉसेस है वह भी आगे कही बंधे हुए है कारोबारी फायदे नुक्सान में। वह एक बड़ी साजिश के एक पैयादे के तौर पर काम कर रहे थे यह पत्रकार। जब तक इनके बॉसेस जैसे रिलायंस जब तक कुछ नहीं कहते है तब तक उस तरफ जाते भी नहीं है। अभी देख लेना इलेक्शन के बाद रंग बदलेगा , दस मार्च के बाद, इनके मालिक बदलेंगे तो यह भी बदल जायेंगे। इनका समाज के भलाई से कोई मतलब नहीं है। अपनी जेब भरते है। मोटी मोटी तनख्वाह होती है। इसके आगे न इनके पास अक्ल है न उसका यह इस्तेमाल करना चाहते है। और बुनियादी तौर पर पत्रकारिता यह होती है आप अलग अलग एंगल से जानकारी दे। स्टोरी को बैलेंस करके दे। जब एक तरफा सब कुछ चलने लगे तो वह पत्रकारिता कहा रहती है। वह तो सिर्फ जनसंपर्क अभ्यास होता है। जो बॉस कहेगा वह करते रहेंगे।

सच का आईना समाज के आगे

डाक्टर बिस्वरूप जी मेडिकल माफिया को लम्बे समय से एक्सपोज कर रहे है पर पर पिछले दो सालो से , जब से कोविद शुरू हुआ तब से आक्रामक तौर पर सामने उभर के आये और मेडिकल माफिया को उजागर किया। सबसे जो उनका हिट फार्मूला रहा वह रहा किडनी डायलसिस के ऊपर। जो उन्होंने पोस्टरल मेडिसिन बहुत ऐतिहासिक रहा है और नेशनल खबर पर तमाम सारे दर्शको ने अपने रिव्यु दिया। अलग अलग माध्यम से हमारे पास दर्शको ने अपनी प्रतिक्रिया भेजी। इसलिए नेशनल खबर हमेशा उनके साथ जुड़ा हुआ है। हर अच्छे काम के लिए हर सामाजिक काम के लिए , स्वास्थय से जुडी हुई उनकी हर खोज के लिए नेशनल खबर उनके साथ है और आगे भी बढ़ चढ़ के उनके कार्यो को जन जन तक पहुंचाने का काम करेंगे।

2019 जब कोविद आया था पहली बार तब मैं पहली बार डाक्टर बिस्वरूप सर से मिली। तब मुझे जानकारी नहीं थी की कोई नया वायरस आया है। उस वक्त समाचार के प्रमुख स्त्रोत केवल सरकार के अनुदेशों का पालन कर रहे थे। पर हम लोग स्वंतंत्र रूप से कार्य करते है। हमारे ऊपर कोई दवाब होता नहीं है क्युकी हम सोशल मीडिया के माध्यम से विषयो को लेकर चलते है। हलाकि हमारे चैनल भी हटा दिए गए। सच्चाई को दबाया गया। जब पूरी दुनिया में यह फर्जी महामारी चल रही तो हमारे मोदी साहब को भी विश्व स्वास्थ्य संगठन के आदेशों का पालन करना पड़ा। उनकी ताकत बहुत छोटी थी इन सबके के सामने। वह अगर नहीं मानते तो उन्हें विश्व स्वास्थ्य संगठन से बाहर कर दिया जाता। जब तालाबंदी हुई , तनाव के उन श्रणो में डाक्टर बिस्वरूप जी ने सही जानकारी देश के आगे रखी। जो विचार करने योग्य बात है की सारी मौते अस्पताल में ही क्यों हुई है। एक भी मृत्यु घर में नहीं हुई। इसकी वजह भी सर ने ही बताया की दवाइओ के अति प्रयोग से हुई। अस्पताल भी इसमें मिली हुई थी। सब इसमें मौका तलाश रहे थे। उस समय प्रवासी मजदूरों का पलायन दुखद था। कोई बच्चा सूटकेस में लेट के जा रहा है , कोई कंधे पर बिठा के जा रहा है। दुखद परिस्थिति थी। इन मजदूरों के लिए जीवन बचाना प्रमुख बात थी। यह चाहते थे की मरना है तो अपने गांव जाकर मरे। सरकार को इस पर संज्ञान लेना चाहिए था पर सरकार बहुत देर से जागी। मजदूरों के साथ गलत तो हुआ ही। उनकी रोजगार गयी , जान गयी। जिम्मेदारी तो केंद्र सरकार की ता बनती ही है।

नाम : स्वाति पांडेय

संस्थापक - नेशनल खबर

शैक्षिक योग्यता: बीए . में स्नातक

वैश्विक षड्यंत्र को बेनकाब करती खोजी पत्रकारिता

नाम: कपिल बजाज

संक्षिप परिचय : कपिल बजाज एक स्वंतंत्र पत्रकार और ब्लॉगर है। मुख्य धारा के कई मीडिया समूह के लिए कार्य कर चुके है। कपिल के बेहरतीन कार्य की शुरवात 2011 -12 के दौरान प्रकाश में आई जब इन्होने पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन के सम्बन्ध में खोजी लेख प्रकाशित की। इनके लेख से जो सच उजागर हुआ वह चौकाने वाले थे। इन्होने पाया की यह संस्था गुप्त रूप से कार्यत आपराधिक समूह के धन कुबेर है जो 2006 में अपने मकसद को भारत सरकार में प्रतिस्थापित कर चुके थे। इन्होने पाया की पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन को कई बड़े दवा कंपनी के सहयोग से चलाया जा रहा है जिसमे सीधा दखल और अधिपत्य बिल गेट्स , रॉकफेलर संस्था, और वेलकम ट्रस्ट शामिल है।

इनके विचार :

अभी जो माहौल है देश में उसमे ऐसे कोई रास्ता नहीं है जो बताये की नई विश्व व्यवस्था क्या है। आज पंद्रह साल के बच्चो को धमकाया जा रहा है की हम आपको परीक्षा में नहीं बैठने देंगे अगर आपने टिका नहीं लिया हो तो। मौलिक अधिकार छीने जा रहे है पर कही भी इसका जिक्र नहीं मिलता है। आज भी अगर आप फोन करेंगे तो आपको पहले कोरोना के बारे में सुनना पड़ेगा। टिका की जबरदस्ती में बड़े दवाई माफिया को इतने मौके दिए जा रहे की जो टिका नहीं ले रहा है जैसे वह भारत का नागरिक ही नहीं है। इस समय आप देखे तो भारत सरकार के बड़े संस्था जैसे भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसन्धान परिषद् पर विश्व स्वस्थ संस्था का डाका पड़ चूका है। मेरा शोध जो पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन पर है साबित करता है की कैसे भारतीय गणतंत्र के छाती पर इन सब लोगो को बिठाया गया है। जिसमे मुख्यत बिल गेट्स , रॉकफेलर संस्था है। इसमें भारत के धन कुबेर जैसे मुकेश अम्बानी से लेकर टाटा और बाहर के बड़े उद्योगपति शामिल है। विश्व आर्थिक मंच की भी बड़ी भूमिका है इस खेल में। इस नकली महामारी को लाने में और जो तारीख इन्होने घोषित की उसमे । इनका मकसद है की सभी तरह के संसाधनों पर कब्जा करना है। इस तरह से बड़े फार्मा समूह का इसे उपनिवेश बस्ती बना दिया गया। वैज्ञानिक एवं औद्योगिक अनुसंधान परिषद भी इसमें शामिल है जो भारत सरकार के लिए शोध का कार्य करती है। राजनैतिक नेतृत्व भी इनके अधीन आ चुकी है। 2006 में संयुक्त प्रगतिशील गठबन्धन की सरकार थी कांग्रेस के साथ मिलके। उस समय पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन बनाया गया था। उस समय आंध्र प्रदेश की सरकार ने पब्लिक हेल्थ फाउंडेशन की शाखा खोली , उस समय गुजरात में मोदी जी ने गांधीनगर में शाखा खोली। उस समय कांग्रेस और विपक्षी पार्टी जैसे भारतीय जनता पार्टी सभी ने इस संस्था का समर्थन किया। रॉकफेलर संस्था पिछले सौ साल से आधुनिक दवा उद्योग पर अपना वर्चस्व रखा हुआ है। अमेरिका के मेडिकल विद्यालयों में जो विविधता थी उसको समाप्त किया। आज भारत का हर चिक्त्सिक बड़े दवा कंपनी के अनुदेशों का ही पालन करता है। हर साल ढाई करोड़ बच्चे जो पैदा होते है उन्हें टिके के जाल में डाल दिया जाता है। वैश्विक स्वास्थ्य करके एक कार्यक्षेत्र बनाया गया जो एक तरह का साम्राज्यवाद है। पश्चिम के महाविद्यालय में वैश्विक स्वास्थ्य को पढ़ाया जाता है। इस नकली महामारी को हथियार बना के लोगो पर थोपा गया है।

युवा आंदोलन के नायक

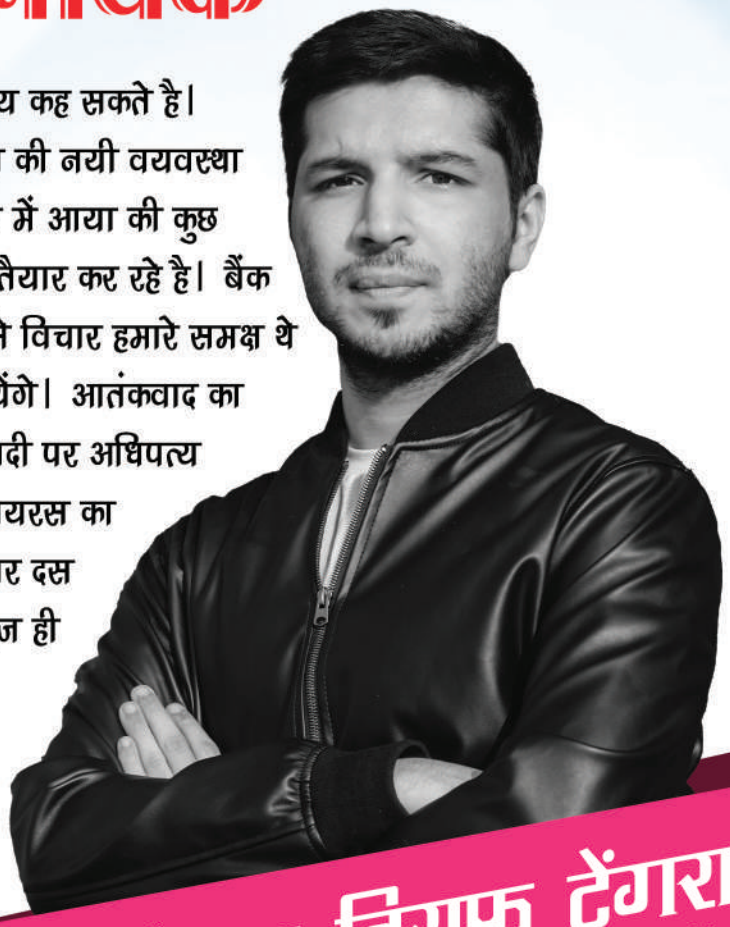

नाम : योहान विराफ टेंगरा

वित्त और लेखा में बैचलर , बीएससी पोषण विज्ञान में, पोषण विज्ञान में मास्टर का अध्ययन कर रहे हैं,

मेरी यात्रा सात साल पहले शुरू हुई , जिसको जागृति का समय कह सकते है। अध्यात्ममें मेरी रूचि थी और उस तरफ मेरा समर्पण था। विश्व की नयी वयवस्था को लेकर मैंने शोध कार्य आरम्भ किया। इसी वक्त मेरे संज्ञान में आया की कुछ लोग दुनिया को गुलामी देने हेतु वैश्विक षड्यंत्र की जमीन तैयार कर रहे है। बैंक व्यवसाय पर भी मैंने जानकारी जुटाई। पांच साल पहले ही ऐसे विचार हमारे समक्ष थे जो संकेत था की ताकत के खेल में कई तरह के षडयंत्र रचे जायेंगे। आतंकवाद का खेल भी ऐसा था जिसमे डर का माहौल बना के दूसरो की आजादी पर अधिपत्य स्थापित करना। इसी तरह से मुझे ज्ञात था की आसानी से वायरस का डर उजागर करके आजादी पर प्रतिबन्ध लगा सकते है। दो हजार दस में रॉकफेलर संस्था के एक चलचित्र में इस बात का अंदाजा सहज ही लगाया जा सकता था। यह सर्विदित था की रोगो के नाम पर वैक्सीन का बाजार तैयार किया जायेगा और इसमें कई देश अहम् भूमिका में नजर आएंगे। जब मोदी जी ने जनता कर्फ्यू की घोषणा की तब भी मैंने एक वीडियो में कहा की अभी तो प्राथमिक स्तर पर शुरूवात है। तालाबंदी से पहले जन मानस के मन की अवस्था समझ ली और जब प्रतीत हुआ की सब घर में आराम से बैठेंगे और विरोध के स्वर बुलंद नहीं होना वाला तब यह अपनी मर्जी करने में लग गए।

इस दो सालो में हमारी उपलब्धि की सूचि भी काफी विशाल हो गयी है। सबसे ऐतिहासिक जीत हाल ही में बॉम्बे उच्च न्यायालय में हमे मिली है। मुख्य न्यायाधीश ने माना है की अगस्त से लेकर अभी तक जितने भी नियम कोविद के रोक. थाम हेतु लागू किये गए है वह गैर कानूनी है और वैक्सीन को लेकर किसी भी प्रकार के भेदभाव हमारे संवैधानिक अधिकारों के हनन का विषय है। अभी हमे यह पक्के तौर में प्राप्त होने में समय लगेगा पर मुख्य न्यायाधीश की राय हमारे पक्ष में आ चुकी है। हमारे सम्मानिये वकील श्री नीलेश ओझा जी ने इसमें अहम् भूमिका अदा की। कानून का सही मार्ग चुन के उन्होंने अदालत में इस तरह से अपना पक्ष रखा की न्यायालय भी हमारे समर्थन में आ गयी। हमारे संघटन के पांच हजार से ज्यादा लोगो ने न्यायालय को चिट्ठी लिखी जिसके परिणाम स्वरूप हमारे केस को तरजीह दी गयी। दूसरी कामयाबी यह थी की भारत सरकार के सूचना प्रसारण विभाग ने हमारे वेबसाइट पर लगाम लगाने की कोशिश की थी। केंद्र सरकार की तरफ से चेतावनी आई की हम कोविद सम्बंधित गलत जानकारी दे रहे है। हमने नीलेश जी से सलाह किया और एक सौ अस्सी पन्नो का जवाब दाखिल किया। इसके बाद इनका कोई प्रतिक्रिया प्राप्त नहीं हुआ है। जमीन पर उतर के कई बड़े आंदोलन मुंबई में किये।

नाम : सखा
आध्यात्मिक प्रतिभा

मधुर वाणी में सच की हुंकार

विवरण : देखिये छह सात साल पहले से हमे यह लगने लगा था की बहुत सी बातो में साजिश चल रही है। इसकी शुरूवात हुई थी जब ईवीएम मशीन पर निगाह गयी थी। इसके बाद जब हम सुचना प्रसारण के क्षेत्र में गए तो काफी बाते पता चली। सॉफ्टवेयर की जानकारी , इसके कार्य रचना के बारे में जानकारी मिली। हमे यह नहीं पता था नई वर्ल्ड आर्डर , पर साजिश थी ऐसा लग रहा था , यह तो पता था की कभी न कभी आम जनता के खिलाफ ऐसा कुछ लेकर आएंगे। जिसमे ज्यादा से ज्यादा लोगो को मारने का काम किया जायेगा। पर यह दस पंद्रह साल बाद होगा। जब शुरू में कोरोना आया तो मुझे भी लगा की वाकई कोई तो वायरस आ गया है जिस से लोग मरेंगे। उस समय हमने तरफ से सिद्धांत यह लिया की हम अपने सामर्थय से अपने लोगो के लिए काम करेंगे। उस समय जो खबरे चल रही थी उस से प्रतीत हुए की यह किसी वायरस का खेल नहीं है , इसके पीछे कोई और वजह है। अब जो साजिश कर रहा है वह अपनी जानकारी रखता है। हमने तो लक्षण देख के इन चीजो को समझना शुरू किया। अभी जो विश्व युद्ध का मसला छेड़ा है वह भी इसी का भाग है। किसी और लगे या न लगे पर मुझे लगता है किसी भी प्रकार का परमाणु हथियार या जैविक हथियार का इस्तेमाल करेंगे या चर्चा करेंगे। जिस से यह आभास हो की हवा में कुछ तो छोड़ा गया है जिस कारण बहुत से लोग इसके शिकार बने। आम जन मानस दोहरे मान. सिकता के शिकार हो जायेंगे। कुछ तो लड़ेंगे की कोरोना से हो रहा है और कुछ को लगेगा की जैविक हथियार से हो रहा है। वह हमेशा हम से दस बीस कदम आगे चलते है। तो जैसा जैसा मुझे दिखता जाता है वैसा वैसा मैं काम करता जाता हु। वायरस के बारे में जो जानकारी दी जाती थी वह गलत दी गई। यह अब हमे पता चलने लगा है। सुचना प्रसारण तंत्र तो आज तक बातो से पलट रहा है। अभी भी जो पत्रकार उक्रैन से कोई जानकारी भेजते है तो उसे भी तोड़ मरोड़ के पेश करते है। वह के किसी व्यक्ति ने अमेरिका के खिलाफ कुछ बोला तो तुरंत पलट गए। हमारे यहाँ के सुचना प्रसारण तंत्र तो लोगो के दिमाग से खेलने का काम करती है। कोरोना साजिश की शुरूवात मीडिया के माध्यम से की गयी थी। हवा में एक माहोल बनाया जाता है। फिर उस माहोल का आंकलन किया जाता है। यह घातक इसलिए है क्युकी यह सच नहीं है। किसी भी इंसान को झूठा आश्वासन नहीं देना चाहिए। आप किसी को जब आश्वासन देते है तो आप उसका समय ले लेते है। और जीवन को देखे अगर तो जीवन समय का जोड़ है। आप किसी का समय कैसे व्यर्थ कर सकते है। जो लोग झूठे आश्वासन देते है वह मुझे अच्छा नहीं लगता है। आज की मीडिया जनता को भ्रम में डाल रही है। यह देश तो क्या मनुष्यता के खिलाफ है।

प्रत्यक्षा तार्किक संवाद बिना लाग लपेट के

नाम संतोष गुरुजी
संस्थापक सेल्फ केयर फाउंडेशन

हर वह व्यक्ति जो आयुर्वेद और प्राकर्तिक चिकित्सा में विश्वास रखता है वह सरकार की उदासीनता देख पाया , समझ पाया , महसूस कर पाया। सरकार का काम है नीतिया बनाना और यह सारी नीतिया जन सामान्य के लिए अच्छी होनी चाहिए। पर सरकार ने इस काल खंड में ऐसी नीतिओ को क्यों समर्थन नहीं दिया जिस से आयुर्वेद और प्राकृतिक चिकित्सा के उपचार विधि को बढ़ावा मिलता। और इस से ज्यादा से ज्यादा लोगो को बचाया जा सकता था। सरकार के नीतिओ के पीछे क्या कारण रहा होगा। एक बड़ा कारण रहा , आजादी के बाद फार्मा का जो उद्योग है उसने बेशुमार तरक्की की है। और आज 2022 में भारत दुनिया की तीसरी सबसे बड़ी दवा कंपनियां बनके उभरी है। तकरीबन 1. 5 लाख करोड़ का निर्यात करती है और 40 से 50 हजार करोड़ आयत करती है। अमेरिका के बाद सबसे जयादा खाद्य एवं औषधि प्रशासन द्वारा स्वीकृत सयंत्र भारत में है। आज दुनिया भर में जितने भी टीका बनते है उसका साठ प्रतिशत निर्माता भारत है। विश्व स्वास्थ्य संगठन के कुल टीके की मांग का चालीस से साठ प्रतिशत निर्माण भारत में होता है। अब आप खुद सोचिये की एक सरकार जो इतने बड़े संस्था के साथ बैठा है , उस संस्था को कैसे उपेक्षित कर सकता है। एक लाख पचास हजार करोड़ दवाइओ का निर्यात भारत की सरकार अंग्रेजी दवाइओ का करती है वही मुश्किल से 500 करोड़ आयुर्वेद के दवाइओ का निर्यात होता है। अभी जामा में एक रिपोर्ट प्रकाशित हुआ की भारत से जो आयुर्वेद की दवाइया निर्यात हुई उसमे टोक्सिन बहुत ज्यादा है। योग को तो स्वीकार कर लिया पर आयुर्वेद को स्वीकार करने में इसलिए कठिनाई हो रही है क्युकी अनेको बार आयुर्वेद के दवाई में टोक्सिन ज्यादा पाई गई। इंडियन ऑक्सीलॉजी इंस्टिट्यूट के वैज्ञानिक योगश्वर शुक्ल जी का कहना है की सत्तर से अस्सी प्रतिशत विकाशील देश अभी भी जड़ी बूटियों से बनी दवा पर आश्रित है। भारत में सरकार के पास ऐसा कोई भी संस्था नहीं है जो आयुर्वेद के गुणवत्ता नियंत्रण पर काम कर सके। भारत के औषधि नियंत्रक संस्था सिर्फ एलॉपथी में ही काम करती है। मुझे दुःख इस बात पर था की महामारी आ चुकी थी , मानक प्रक्रिया का आभाव था , दुसरे देशो के मान्यता प्राप्त तरीके को ही मानना था। भारत के लिए चुनौती थी इतने बड़े निर्यात का बाजार को संभाले कैसे। सरकार में दक्ष लोगो की कमी रही। सरकार में हिम्मत की कमी रही की वह दक्ष लोग जो हमारे आयुर्वेद और प्राकर्तिक चिकित्सा को लेकर काम कर पाए। इसमें हिम्मत डॉक्टर बिस्वरूप ने दिखाई और उन्होंने हजारो लोगो को प्रशिक्षित किया , लाखो लोगो को ठीक किया , घरो में ही शून्य मृत्यु दर के साथ लोग ठीक हुए और अनुमोदन मिलने के बाद अस्पताल की भी स्थापना की। विश्व स्वास्थ्य संगठन के सारे नवाचार के खिलाफ जाकर , बहुत सारी बुराई को सुन के भी टिके रहे क्युकी उनकी विधि आसान थी , तर्क युक्त था , परिणाम देने वाला था। पर इसके बावजूद भी आज भी सरकार उदासीन है।

नाम : अशोक गुप्ता और सुजाता गुप्ता

हर मनुष्य अपना स्वास्थ्य खुद लिखता है : गौतम बुद्ध

प्राकृतिक आहार और जीवनशैली स्वास्थ्य का एक बहुत ही प्रभावी तरीका है. इस पर दुनिया भर में बहुत से वैज्ञानिकों कई सालों से काम कर रहे हैं और उनको अभूतपूर्व सफलता मिली है. प्लांट बेस्ड डाइट और प्राकृतिक जीवनशैली से बहुत से रोगों को ठीक करने में मदद मिलती है और इसके कई प्रमाण भी मिलते है जिससे बहुत से परिवारों को एक स्वस्थ जीवन जीने की प्रेरणा मिली. अशोक गुप्ता एक सर्टिफाइड नुट्रिशन और लाइफस्टाइल एक्सपर्ट हैं, और मिलेट एक्सपर्ट सुजाता गुप्ता के साथ गत 5 सालों से उत्तर भारत में प्राकृतिक खाने और मिलेट जैसे अनाजों को परिवारों तक ले जाने में प्रयासरत हैं. इस दौरान उन्होंने 8000 से ज्यादा परिवारों तक इस जानकारी को पहुँचाया है इसमें दिल्ली - गुडगाँव के करीब 1000 से ज्यादा परिवार हैं. इनके चैनल व्होलसम-टेल्स (WholesomeTales Wellness) को लाखों लोगों ने सराहा है और इनके बताये भोजन के तरीके और जीवन शैली के बदलाव से कई लोगों को स्वास्थ्य समस्याओं जैसे मधुमेह, मोटापा, थायराइड, पी.सी.ओ.डी., आर्थराइटिस, आदि में लाभ मिला।

सुजाता जी ने बताया कि - "हमारा भोजन ऐसा होना चाहिए जो पोषण भी दे और शरीर में मौजूद टोक्सिन को भी बाहर निकालने में मदद करे". बिस्वरूप जी द्वारा बताई गयी डी.आई.पी डाइट एक बहुत बढ़िया फलों और सब्जियों का संगम है जो शरीर को जरूरी पोषण तो देता ही है साथ ही शरीर को बीमारियों से लड़ने में मदद करता है।

भारत और विश्व को पूर्ण रूप से आत्मनिर्भर बनाना है और सम्पूर्ण स्वास्थ्य प्राप्त करना है तो हमें प्राकृतिक जीवन शैली को अपनाना होगा। इस दिशा में श्री बिस्वरूप रॉय जी का कार्य बहुत सराहनीय है और उन्होंने अपने ज्ञान से लाखों को प्रेरित तो किया ही है साथ ही उनको स्वस्थ जीवन का मार्ग दिखाया है.

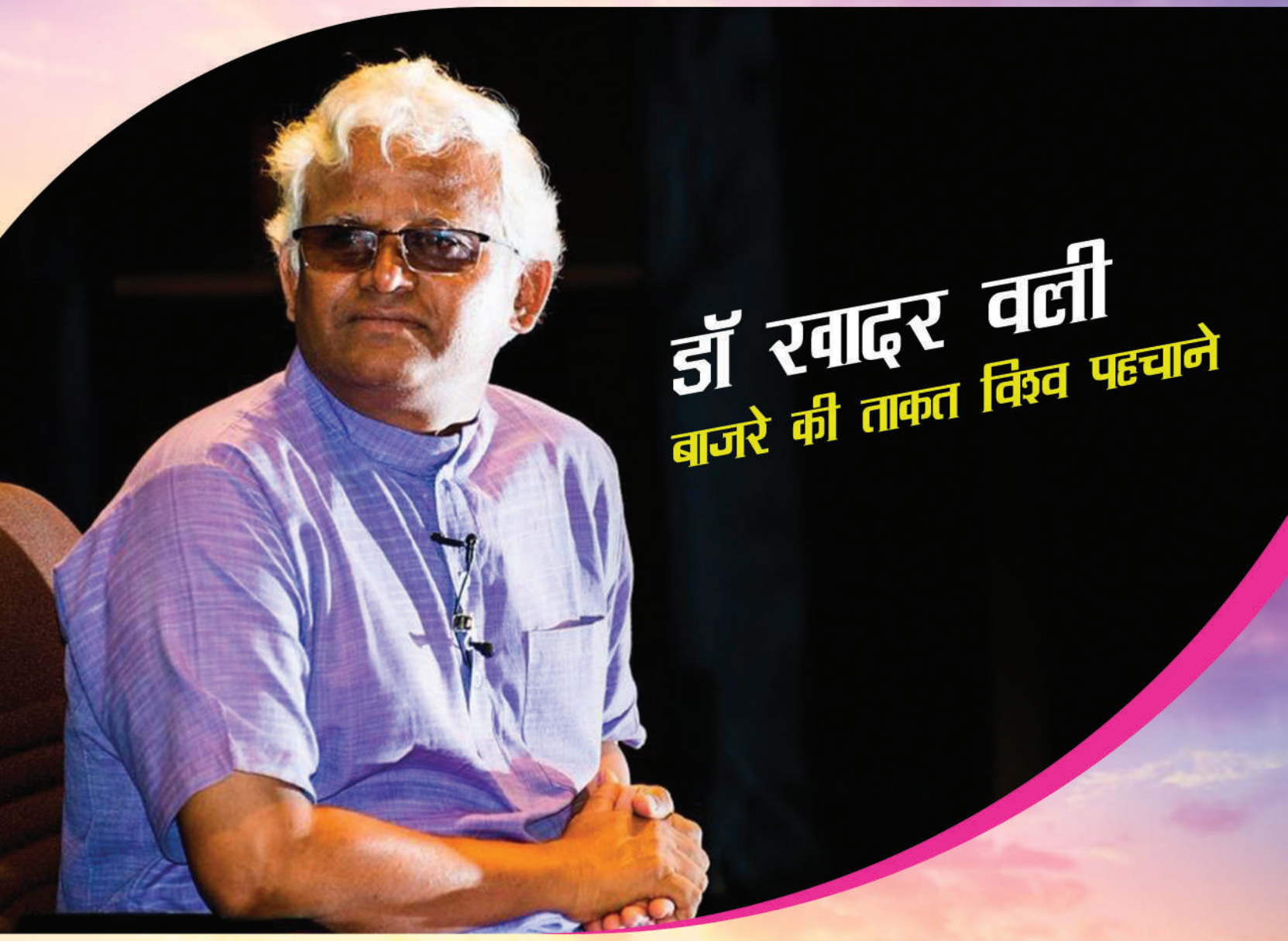

डॉ खादर वली
बाजरे की ताकत विश्व पहचाने

जब खाना गलत हो तो दवा किसी काम की नहीं होती
जब खाना सही हो तो दवा की जरूरत नहीं होती है
डॉ खादर वली

सही प्रकार का भोजन, एक साधारण जीवन शैली और सही कृषि पद्धति। यह सब ही समाज में अच्छा स्वस्थ लाने के लिए आवश्यक है ऐसा मानना डॉ खादर वली का जो अमेरिका से हाल ही में लौटे है।

डॉ खादर वली भोजन को दवा बताते है और सवयं को इस माध्यम से चिकित्सक के रूप में स्थापित करते है । आप मानते है की बाजरा कैंसर सहित लगभग हर संभावित बीमारी को ठीक कर सकता है। रोगो के निदान को लेकर आप किसी तरह के चमत्कार नहीं करते है , बस इतना करते है की भोजन में थोड़े परिवर्तन करते है और जरा सी दवाई की सलाह देते है। बस इतना करने भर से आज हजारो नागरिक आपके मैसूर में स्थित निवास स्थान में अपने आप को निरोगी बनने की आस लिए आते है और आपके के तरीके को किसी जादू की तरह पाते है। बाजरे से उपचार विधि को लेकर आप इतने लोकप्रिय है की अब प्यार से आपको लोग भारत के बाजरे शख्सियत के रूप में आप जाने जाने लगे है। आपने मैसूरू के रीजनल कॉलेज ऑफ एजुकेशन से एम एस सी की डिग्री हासिल की है और इंडियन इंस्टिट्यूट ऑफ साइंस बेंगलुरू से स्ट्रीयड पर पीएच.डी की है। आपका एक और जुनून है भावी पीढ़ी के लिए मिट्टी को बचाना। यह तभी संभव होगा जब हम सही तरह के खेती के नियम को अपनाएंगे। आपको लगता है की जिस तरह खेती आज किसान कर रहे है उस से अगले तीस साल में जमीन उपजाऊ नहीं रह जाएगी।

वयक्ता और प्रवक्ता, दोनों धार के महारथी

नमस्कार , मेरा नाम कमल प्रीत सिंह है , मैं कनाडा के टोरेंटो शहर में रहता हु। जब कोरोना प्लान्डेमिक की घोषणा की गयी थी जनवरी 2020 में , उस समय कनाडा आये हुए मुझे एक महीना हुआ था। उस वक्त मेरी पढाई चल रही थी। कुछ महीनो के बाद तालाबंदी होना शुरू हो गया। महाविद्यालय, विद्यालय बंद हो गए , मैं घर में अपनी शिक्षा पूरी करने लगा। मैं शुरू से प्राकृतिक चिकत्सा , आयुर्वेद में गहरा विश्वास था तो मुझे लगने लगा की कुछ तो गड़बड़ है। मैं चिकित्सक सम्बन्धी किताबे पढ़ने लगा। इस बिच रशीद बुट्टल जो अमेरिका के डॉक्टर है उनकी वीडियो मेरे सामने आई। उस वीडियो का शीर्षक था की यह चलचित्र अगले चौबीस घंटे में हटा दिया जायेगा। उस चलचित्र में कोरोना साजिश के बारे में बेहद ही चौकाने वाले और हैरान करने वाले जानकारी थी। उसके बाद मुझे पता चल गया की यह महामारी झूठी है। इसके बाद डॉक्टर बिस्वरूप के वीडियो मेरे सामने आई। वह वीडियो मैं देखता रहा। डॉक्टर बिस्वरूप की खास बात थी की उन्होंने नाइस की स्थापना की जिसका उद्देश्य बिना किसी दवा या चिकित्सक के लोगो का इलाज करना और कोविद मुक्त करना था। उसी दौरान मैंने बिस्वरूप सर के यहाँ से अग्रिम पोषण चिकित्सा पर शिक्षा अर्जित की। इसके कारण आपका भोजन कैसे आपके लिए दवा का काम करता है इसकी जानकारी मिली। जिस तरह से डॉक्टर सर के वीडियो को यू ट्यूब से हटाया गया उस से मुख्य यकीन हो गया की सच को दबाया जा रहा है। नाइस के दल में शामिल होकर मैं ढाई सौ से ज्यादा कोविद के मरीजो को ठीक किया। मैंने कई सारे माध्यमों से लोगो को जागृत करना शुरू किया। यहाँ कनाडा में भी मैंने अपने इलाको में जाकर इस बारे में जानकारिया दी, लोगो को स्वास्थय करने में मदद की। लोगो की मौत तो रेमडेसिविर जैसे घातक दवाइओ से हो रही थी। तब समझ आया की एलॉपथी पूरा का पूरा फर्जीवाड़े पर खड़ा है। इसके आलावा मैंने अमेरिका, कनाडा, ऑस्ट्रेलिया के बड़े बड़े डॉक्टर से भी सलाह परामर्श किया। मैंने हर पेथी के चिकित्सक से संवाद किया। इसमें मैने पाया की पीसीआर प्रयोग से किसी को सकारात्मक और नकारात्मक नतीजों में लिया जा सकता है। अस्पतालों में तो इलाज के नाम पर लोगो की हत्या की जा रही थी। मास्क से लेकर सामाजिक दूरी जैसे नियम से लोगो को मानसिक रूप से बीमार और नियंत्रित किया जाता है। यहाँ पर आंदोलन हुए। वह पर जाकर डॉ बिस्वरूप का तीन चरणों में पोषण खान पान के जरिये रोग मुक्ति के तरीके बताये। हमने बताया मास्क जान लेता है और प्यार और अपनापन जिन्दगी देती है। हम सब स्वंत्रता सेनानी है जो सच की लड़ाई लड़ रहे है। मैंने डॉ बिस्वरूप से बहुत सारे चीजे सीखी और लोगो को भी जागरूक किया। जीवन शैली रोग जितने भी है उनसे प्राकर्तिक चिकित्सा से निदान मिलता है। उम्मीद करता हु हम सब क्रन्तिकारी मिलके इस संसार का भला कर सकेंगे। धन्यवाद।

नाम : कमल प्रीत सिंह
पोषण चिकित्सक

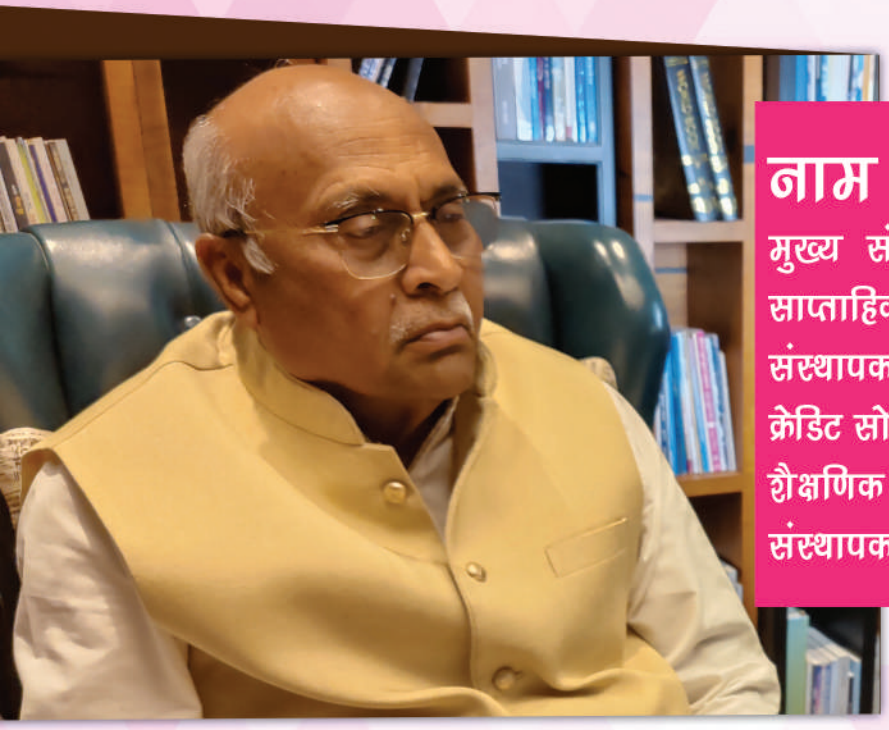

नाम : प्रकाश पोहरे

मुख्य संपादक : दैनिक देशोन्नती, हिंदी दैनिक राष्ट्रप्रकाश, साप्ताहिक कृषकोन्नती

संस्थापक अध्यक्ष : निशांत सहकारी मल्टीस्टेट को-ऑप क्रेडिट सोसायटी

शैक्षणिक योग्यता: वाणिज्य स्नातक

संस्थापक अध्यक्ष: महाराष्ट्र संपादक परिषद

कोरोना के बाबत निष्पक्ष और ओजस्वी पत्रकारिता

श्री प्रकाश पोहरे जी अकोला से आते है और विगत दो वर्षो में कोरोना षड्यंत्र के खिलाफ अपनी पत्रिका दैनिक देशोन्नती के माध्यम से आम नागरिको के समक्ष जन जाग्रति अभियान छेड़ा हुआ है। श्री प्रकाश पोहरे जी ने तालाबंदी का भी पुर जोर विरोध किया है और अपने जिले और अपने शहर में प्रशासन के खिलाफ जाते हुए दुकाने खुलवाई है। डबकी रोड में तालाबंदी के विरोध में सभी दुकानदारों से उनके दूकान को खोलने का आवाहन बेहद वायरल हुआ। इसके अलावा इन्होने जबरदस्ती टीकाकरण के खिलाफ मुहीम छेड़ रखी है। अपने मुखर और बेधड़क बोलने को लेकर प्रकाश जी जन जन में बेहद लोकप्रिय है। हाल ही में महाराष्ट्र के स्वास्थय मंत्री से भी टीकाकरण के जबरदस्ती पर बात की और इसे रोकने सम्बन्धी विषयो पर सफलता हासिल की है। हाल ही में कई जिलों में राशन वितरण में उन ग्रामीणों को जिला कलेक्टर के फरमान पर राशन के लिए मना कर दिया गया जो टिका नहीं ले रहे थे। यह संविधान विरोधी फरमान था और प्रकाश जी ने कहा "भारत का राष्ट्रपति भी आपका राशन नहीं बंद करा सकता है क्युकी कानून है और उस कानून का नाम है अन्न सुरक्षा, इसके तहत आपने एक शिकायत दर्ज करा दी तो आपके घर राशन पंहुचा के जायेंगे। बस करना इतना है की जब आपको मना किया जाये तो उसका एक वीडियो बना ले।"

प्रकाश पोहरे जी डॉ बिस्वरूप के साथ मिलके कोविद काल में अकोला में नेचुरोपैथी पर सेंटर भी खोला। प्रकाश पोहरे ने यात्रा आमंत्रण से कहा " मीडिया को तो सरकार ने खरीद लिया था। प्रिंट मीडिया की स्थिति भयंकर खराब है क्युकी न्यूज प्रिंट की कीमते बढ़ी है। महंगाई के अखबार छापना मुश्किल रहा है। कोरोना काल में मीडिया पब्लिक के साथ नहीं रही , यह तो सच है। पर हमारा प्रकाशन ही जनता के साथ खड़ी रही।" तो क्या माने की लोकतंत्र का चौथा स्तंभ पूरी तरह से सरकार के हाथ की कठपुतली बनी रही।

प्रकाश पोहरे जी पहले भी कई आंदोलन में शामिल रहे जैसे राजीव वस्त्र बहिष्कार
बिजली रोको आंदोलन, प्याज आंदोलन, देशी शराब ठेके बंद आंदोलन 1992
कपास सीमापार आंदोलन 1993, शहर सफाई अभियान 1994, खड्डे बुजाव अभियान1995
इसीलिए हम इन्हे क्रन्तिकारी कहके सम्बोधित कर रहे है।

नाम : वीरेंदर सिंह

शैक्षणिक योग्यता: मैं डिग्री में विश्वास नहीं रखता हु , आप मुझे अनपढ़ मानिये

गलत को गलत कहने की हिम्मत का दूसरा नाम

मेरी यात्रा : 2011 में राजीव दीक्षित जी को सुनने के बाद मैं सेवाग्राम वर्धा से जुड़ के काम किया। सेवाग्राम का लक्ष्य व्यापारिक ज्यादा था । पर हमने उन्हें छोड़ा क्युकी हमे लगा की राष्ट्र से जयादा महत्वपूर्ण उनके लिए व्यापार था। इसके बाद देश के कई और संघटनो के साथ काम किया पर अंत में यह हो जाता था की उनके मूल में राष्ट्र से ज्यादा उनके लिए व्यतिगत उद्देश्य जरूरी हो जाते थे। लेकिन अव्हेकन इंडिया मुव्हमेंट जिसमे सभी अपनी आत्म मुग्धता को छोड़ के खुद के विचार अनुसार चलाने का जो प्रयास था उसे छोड़कर राष्ट्र को सोच के जो काम कर रहे है उसमे राष्ट्र के लिए एक दिशा नजर आती है। तो उनके साथ काम कर रहे है।

बोवेन सेरियम पर संघर्ष : हमारे एक साथी है विकास पाटनी। उन्होंने सुचना के अधिकार के तहत बोविन सेरियम पर जानकारी जुटाई। सरकार ने जो स्वीकार किया की बोविन सेरियम का इस्तेमाल हो रहा है , फिर जब सब मीडिया कहने लगी की इसके आखिर चरण में इस्तेमाल नहीं होता है , यह एक भ्रामक जानकारी थी और उसको अनावरत करने के लिए फिर हमने एक वीडियो के माध्यम से कहा की आखिरी चरण में न भी हो फिर भी अगर गलत खुराक देकर आप अगर उसे ला रहे है तो आयुर्वेद के अनुसार उसका सूक्ष्म रूप तो रहेगा ही रहेगा। अंत में हमारा धर्म भ्रष्ट कर ही रहे है। जीवनदायनी शक्ति का नाश करेगा ही करेगा। हम जैसे शाकाहारी लोग है जो शाकाहार को मानते है, के लिए विध्वंसक चीज है।

मास्क के खिलाफ लड़ाई पर विचार :

सबसे महतवपूर्ण है अध्ययन और ज्ञान। इसमें हमारे डी एन ए की भूमिका होती है। मैं राजस्थान से हु तो वह पर लड़ने वाला डी एन ए होता है। हमारे अंदर लड़ने की प्रवर्ति के साथ ज्ञान का भी समागम है। जब नीलेश ओझा जी ने हमे बताया की कानून में हमारी क्या ताकत है, उसी से हमारी हिम्मत बढ़ी और लड़ाई शुरू करी।

अकेलापन महसूस होता है विरोध करने के मध्य :

जब आपका उद्देश्य ईश्वरीय कार्य होता है। जैसे बहुत लोग यह आरोप लगाते है की आप सोशल मीडिया में प्रसिद्धि पाने के लिए यह सब कर रहे है। हमने कभी भी अपने चैनल पर सब्स्क्राइबर की भीख नहीं मांगी। यूट्यूब में वीडियो डालना हमारा एक काम है अंतिम लक्ष्य नहीं है। करोडो लोगो में अगर हमे ईश्वर ने इस काम के लिए चुना है तो यह ईश्वर की रजा है। जैसे क्रांतिकारिओं के पास भी बहुत ज्यादा जन बल नहीं था फिर भी देश के आजादी के लिए लड़ते थे। समर्थन हो या न हो इससे कोई फर्क नहीं पड़ता है। हमे पता है की हम सहीकाम कर रहे है तो अंत में समर्थन मिल ही जायेगा। लोगो को पता है की हम अच्छा काम कर रहे है भले ही समर्थन दे या न दे।

कानून के साथ देश का परिचय

भारत सरकार के भारतीय आयुर्विज्ञान अनुसंधान परिषद ने लिख के दिया है की हमारे पास कोई सबूत नहीं की मास्क या सामाजिक दुरी से कोरोना का प्रचार रूकता है। स्वास्थ मंत्रालय ने स्पष्ट कहा की स्वास्थय व्यक्ति को मास्क नहीं पहना चाहिए। 32 अध्ययन हुए जिसमे तथ्य सामने आये की मास्क पहने से आपके फेफड़े खराब हो सकते है, ऑक्सीजन का स्तर कम हो सकता है , सरदर्द, खून की समस्या, आगे चलकर कैंसर ऐसे कई बीमारी हो सकते है। संक्षिप में कहे तो आपके शरीर के रोग प्रतिरोधक क्षमता को कम करके आपको बीमार करने की इनकी योजना है। कोरोना के माध्यम से शरीर के रोगो से लड़ने की ताकत को कम करने का एक षडयंत्र है और वैक्सीन कंपनी को फायदा पहुंचाया जा रहा है यह सब हम ने मुंबई उच्च न्यायालय में हमने अपने याचिका में कहा है। महाराष्ट्र के पूर्व प्रमुख शासन सचिव सीताराम कुंटे एक परिपत्र लेकर आये थे जिसमे कहा गया था की जो टीका नहीं लेंगे वह मुंबई स्थानीय रेल यात्रा नहीं कर सकेंगे या माल आदि जगहों पर नहीं जा सकते है। इसमें यह भी लिख दिया था की जिस दफतर में बिना वैक्सीन लिए लोग पाए जायेंगे उन पर पचास हजार का जुर्माना लगाया जायेगा। कोई व्यक्ति बिना मास्क के मिल गया तो उसको पांच सौ या दो सौ का जुर्माना लगेगा। इसके आधार पर इन्होने उगाही या वसूली शुरू कर दिया था। हमने इस आर्डर को चुनौती दी। अभी जो याचिका हमने दिया उसमे हमारी मांग है की ऐसा कोई आदेश जो टीका और गैर टीका लिए व्यक्ति में भेद करे वह गैर संवैधानिक है, मास्क का जुर्माना लेने का सरकार को अधिकार ही नहीं है क्युकी आपदा प्रबंधन अधिनियम में प्रावधान है ही नहीं , इसलिए इन्होने अपने मन से मास्क के नाम पर जो जुर्माना लिया है इसे कानून की भाषा में जबरदस्ती वसूली कहा जाता है। मुंबई में 120 करोड़ रूपये की वसूली के सारे पैसे न्यायालय इनसे ले और जनता को वापस करे या सामाजिक कार्य में लगाए। अगर सरकार तालाबंदी करती है तो आपदा प्रबंधन अधिनियम का सेक्शन द्वितीय कहता है की सरकार द्वारा जो भी प्रतिबन्ध लगाए उसकी भरपाई सरकार करे। छोटे से छोटे व्यापारी के नुक्सान को सरकार पूरा करके दे। 1897 में जब प्लेग आया तब पुणे में अधिकारी जब किसी के दूकान को कीटनाश के रोक. थाम के कारण बंद करते थे तो उनको उस दिन के नुक्सान का सारा पैसा उसी वक्त देते थे।

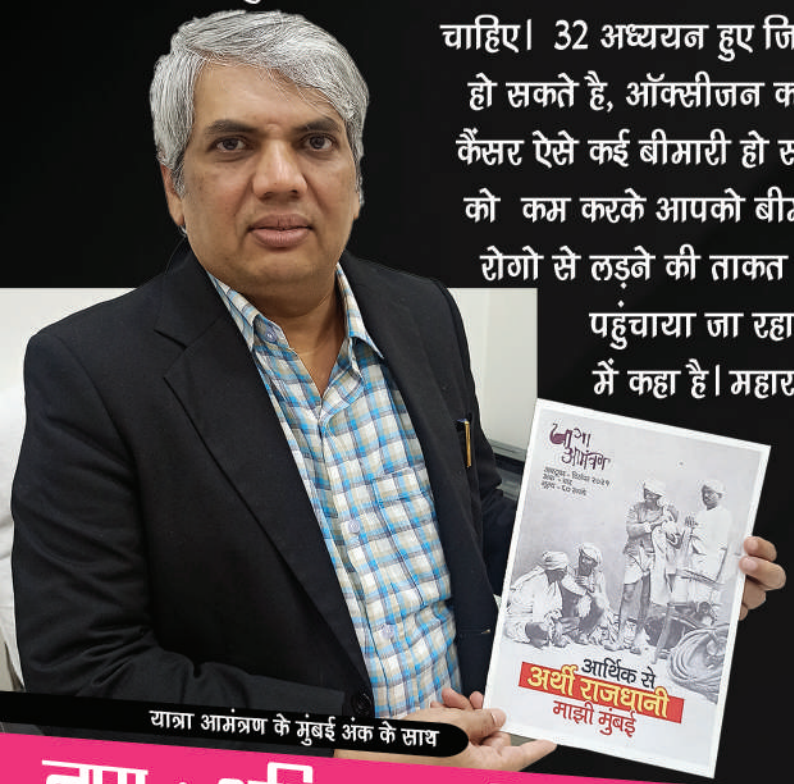

नाम : अधिवक्ता नीलेश ओझा
राष्ट्रीय अध्यक्ष इंडियन बार कौंसिल

देश के आम कर दाताओ के पैसो का दुरूपयोग हुआ है, एक तरह की धोखा धडी हुई है , हमने अपने याचिका में यही लिखा है की जनता के निधि के दुरूपयोग किया है इसीलिए इनके खिलाफ भारतीय दंड संहिता 409 , 120B , 52 के तहत अभियो. जन आदेश दिया जाये। इस मामले में सबसे पहले आरोपी मुख्या मंत्री उद्धव ठाकरे है , उसके बाद नगर आयुक्त इकबाल चहल , इसके बाद अपर आयुक्त सुरेश काकानी और पूर्व मुख्य सचिव सीताराम कुंटे को बनाया है और अभी के नए प्रमुख सचिव देबाशीष चक्रवर्ती। इन सभी की अदालत की तरफ से आदेश जारी हो चूका है। यह सब व्यक्तिगत रूप से आरोपी के श्रेणी में आ चुके है। एक मार्च के आर्डर में अदालत ने कह दिया है की महाराष्ट्र सरकार का आदेश गैर संवैधानिक है।

नाम : मानस समर्थ

प्रमाणित पोषण विशेषज्ञ और मधुमेह शिक्षक

यूटयूब चैनल समर्थ मानस

मेरा कर्म मेरी पहचान

मानस समर्थ ने सोशल मीडिया में प्राकर्तिक चिकित्सा के पैरोकारी और डॉक्टर बिस्वरूप के समर्थनः में निर्णायक कार्य किया।

डॉ. बिस्वरूप का ज्ञान हर किसी तक पहुंचे इसे ध्यानः में रखते हुए मैंने "होलिस्टिक हेल्थ एंड वेलनेस फाउंडेशन" नामक एक टीम की स्थापना की, जिसका उद्देश्य लोगों को स्वास्थ्य के बारे में शिक्षित करना है और क्या खाना चाहिए और कैसे खाना चाहिए इस बारे में जानकारी दी जाती है।

मई 2019 में, मुझे दिल की समस्या हुई और सीने में तेज दर्द हुआ और मुझे अस्पताल में भर्ती कराया गया। मैंने बहुत सारे परीक्षण और निदान किए। फिर मैंने सीटी स्कैन एंजियोग्राफी करवाई, जिसमें मेरी हृदय की धमनियों में 3 ब्लॉकेज दिखाई दिया यानी एक 60-80:ध्दूसरा 70-80:ध्तीसरा 90: से अधिक। डॉक्टरों ने मुझे तुरंत स्टेंट इम्प्लांट की सलाह दी, नहीं तो मुझे कभी भी दिल का दौरा पड़ सकता है। भारत के अलावा, मैंने यूएसए में दो डॉक्टरों से सलाह ली लेकिन सभी ने मुझे तुरंत स्टेंट लगाने की सलाह दी। लेकिन मैंने वो नहीं किया जो लाखों लोगों ने किया। मैंने गूगल पर सर्च किया और फिर डॉ. बिस्वरूप का वीडियो देखना शुरू किया जिसमें उन्होंने बताया कि आप केवल फल और कच्ची सब्जियां जैसे पौधे आधारित भोजन लेकर हार्ट ब्लॉकेज को बहुत आसानी से उलट सकते हैं। मैंने उनका वीडियो देखना शुरू किया और जनवरी 2020 से खुद डीआईपी डाइट शुरू की, और केवल 15 दिनों के भीतर, मेरा एनजाइना का दर्द काफी कम हो गया था, फिर मैंने अपनी दवा को कम करना शुरू कर दिया और कुछ और दिनों के बाद मैंने अपनी सभी दवाएं यानी 16-18 गोलियां बंद कर दीं। एक दिन में। एक महीने के भीतर ही मुझे बहुत सुकून मिला।

उसके बाद मुझे लगा कि बिना दवा और सर्जरी के बीमारियों को उलटना ध ठीक करना कितना आसान है लेकिन हमारे चिकित्सा उद्योग ने इसे इतना जटिल बना दिया है और फिर मैंने इस बारे में लोगों को जागरूक करने के बारे में सोचा। अप्रैल 2020 में, मैं डॉ। बिस्वरूप रॉय चौधरी से मिला और उनके मिशन में शामिल हो गया और अपनी जानकारी के लिए मैंने लिंकन यूनिवर्सिटी कॉलेज मलेशिया से पोषण पाठ्यक्रम और इंडो वियतनाम मेडिकल बोर्ड, वियतनाम से मधुमेह शिक्षक पाठ्यक्रम में प्रवेश लिया। मैं नेचुरोपैथी और योगिक साइंस में भी डिप्लोमा कर रहा हूं। आज मुझे उस टीम का हिस्सा होने पर गर्व हो रहा है, जिसने कोविड ध्आई एल आई के 70,000 से अधिक रोगियों को बिना पैसे दवा के और बिना मृत्यु दर के ठीक किया।

मैं डॉ. बिस्वरूप रॉय चौधरी की टीम में एक अच्छा और बुद्धिमान विशेषज्ञ हूं। डॉ बिस्वरूप रॉय चौधरी का सपना की लोग छोटी से बड़ी बीमारी से छुटकारा पा सकें और इसे घर पर ही ठीक कर सकें।

आप जीवन शैली रोग संबंधी विकार (मधुमेह, उच्च रक्तचाप, हृदय रोग, पाचन विकार, त्वचा रोग, थायराइड रोग, हड्डी विकार, कैंसर और मोटापा) को कुछ ही दिनों में उलट सकते हैं।

सीधी और साफ वैज्ञानिक बाते

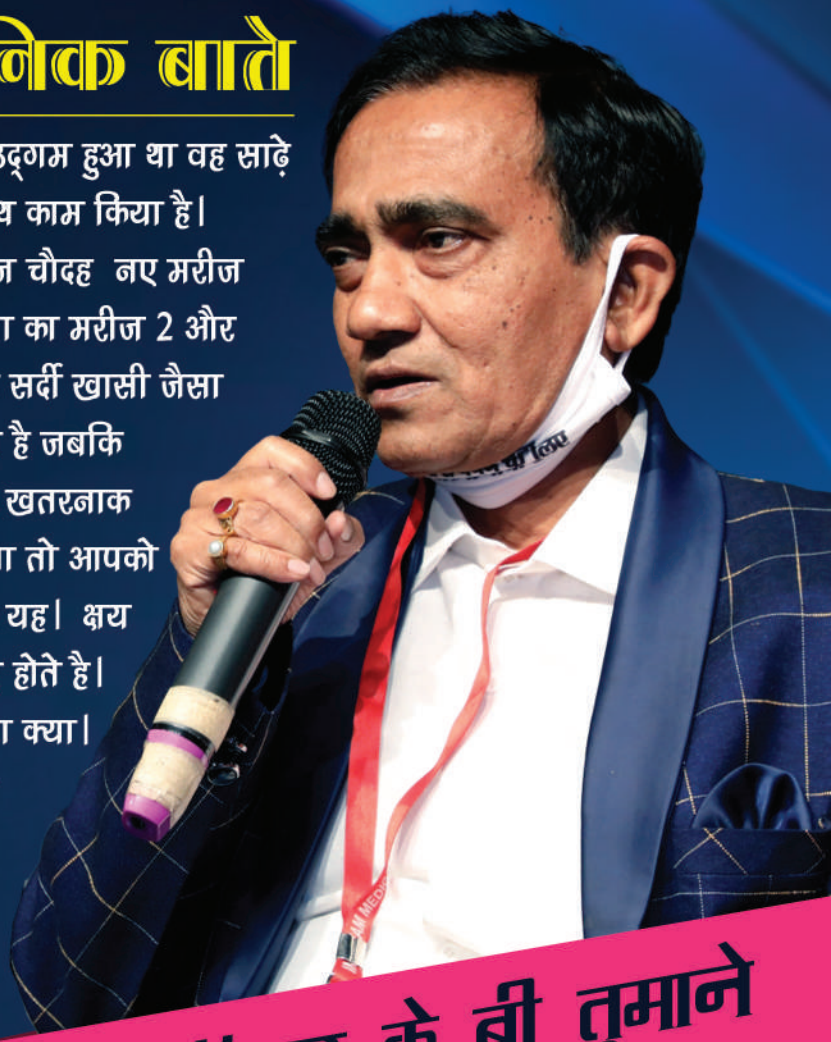

नाम : डॉक्टर के बी तुमाने

संयोजक : एक परिवार दो संतान मिशन
पूर्व निदेशक स्वास्थ्य नागपुर नगर निगम

यह कोरोना वायरस कोई नया वायरस नहीं है। इसका जो उद्गम हुआ था वह साढ़े पांच करोड़ साल पहले हुआ था। मैंने कई डरावने रोगो के साथ काम किया है। अभी आप देखिये ट्यूबरकुलोसिस या क्षय रोग का एक मरीज चौदह नए मरीज बनाता है। उसको अगर कोविद से तुलना करे तो एक कोरोना का मरीज 2 और लोगो को संक्रमित करता है। यानि कोरोना बेहद मामूली सा सर्दी खासी जैसा ही है। क्षय रोग के माध्यमिक चरण का इलाज दो साल चलता है जबकि प्राथमिक चरण में इलाज छह महीने चलता है। इसमें एक और खतरनाक ट्यूबरकुलोसिस आया है एमडीआर। एमडीआर मरीज खासेगा तो आपको भी एमडीआर ही देगा। तो यह कोविद से कई गुना भयावह है यह। क्षय रोग से हर साल 4.5 लाख मरते है जिनमे से जयादातर युवा होते है। इतना खतरनाक रोग होने के बाद भी किसी ने मास्क लगाया क्या। हम जब उन मरीजो के पास जाते थे तो हम कोई मास्क नहीं लगाते थे। आज तक मुझे या मेरे सहयोगी को कोई बीमारी नहीं हुई न सरकार ने मास्क लगाने को कहा। मेरे नजदीक का रिश्तेदार उसको कोरोना हो गया। मेरा जो हल्दी का उपचार है , दिन में तीन बार और हफ्ते में सात दिन और साथ में डॉ बिस्वरूप का जो उपचार विधि है वह। दो दिन में उसका बुखार उतर गया। बुखार उतरने के बाद ऑक्सीजन लेवेंल कम हो गयी। घर के लोगो ने उसे हॉस्पिटल में भर्ती करा दिया। उसका कोविद टेस्ट हुआ, उसमे पॉजिटिव मिला। जैसे ही उसने 13 गोलिया खाई उसको थक्का बनना शुरू हो गया। और दिमाग के ब्रोकॉज भाग में क्लॉट पहुंच गया और वह लकवे का शिकार हो गया। उसका दाहिना भाग लकवा ग्रस्त हो गया और आवाज चली गयी। जब भी कोई मरीज इस नवाचार के तहत इलाज के लिए जाता है तो वह पर जटिलता की स्थिति बनती है। इसके बाद उसे इंटेंसिव केयर में डाल देते है और वह से उसे वेंटीलेटर में ले जाते है। मैंने अपने 32 साल के मेडिकल जीवन में जिसमे मैं बीस साल हॉस्पिटल में रहा , मैंने किसी को वेंटीलेटर से बाहर आते नहीं देखा। और वेंटीलेटर का खर्चा उठाना एक आदमी के बस की बात नहीं। जबकि डॉ बिस्वरूप प्रोन वेंटिलेशन की सलाह देते है जो सुरक्षित और आसान है।

Hunza Tea

DRINK TO YOUR HEALTH

Hunza Tea

An Ayurvedic Product

चाय नहीं → हुंजा टी (Hunza Tea)
सेहत के लिए आदत बदलो

Hunza Tea leaves consist of natural ingredients, namely holy basil, mint, cardamom, cinnamon and ginger. These ingredients have never been processed with chemicals, additives or preservatives. This natural drink forms an essential part of the diet of the Hunza people.

MRP : 400/
(incl. of all taxes)

Buy online at www.biswaroop.com/shop | Call: +91-9312286540

RNI No:
HRAHIN/2017/72144

Rajiv Dixit Memorial

Hospital & Institute of Integrated Medical Sciences

Dr. Amar Singh Azad
MBBS, MD

Dr. Biswaroop Roy Chowdhury
Ph.D (Diabetes)

Acharya Manish
(Ayurveda Guru)

Dr. Awadhesh Pandey
MBBS, MD

Devinagar, Delhi highway, Dera Bassi (Chandigarh)

We believe: "To Cure, remove the cause"

Contact us at:

Phone : 7827710735

www.biswaroop.com/chdhospital

Postural Medicine • Allopathy • Homeopathy • Ayurveda • Naturopathy